सफल कृषि उद्यमी

Successful Agripreneurs

कृषि विज्ञान केन्द्र, कोटा

प्रसार शिक्षा निदेशालय

कृषि विश्वविद्यालय, कोटा

Krishi Vigyan Kendra, Kota

Directorate of Extension Education

Agriculture University, Kota

सफल कृषि उद्यमी

Successful Agripreneurs

संकलन एवं संपादन

डॉ. महेन्द्र सिंह
डॉ. रूप सिंह
श्रीमती गुंजन सनाढ्य
डॉ. राकेश कुमार बैरवा
डॉ. अरविन्द नागर
डॉ. मुकेश चौधरी
सुश्री सरिता

कृषि विज्ञान केन्द्र, कोटा
प्रसार शिक्षा निदेशालय
कृषि विश्वविद्यालय, कोटा

Krishi Vigyan Kendra, Kota
Directorate of Extension Education
Agriculture University, Kota

संरक्षक
डॉ. ए.के. व्यास
कुलपति

मार्गदर्शन
डॉ. एस.के. जैन
निदेशक प्रसार शिक्षा

मुख्य संपादक
डॉ. महेन्द्र सिंह
वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष

संपादक
डॉ. रूप सिंह
विषय विशेषज्ञ (पादप रोग विज्ञान)

सह–संपादक
श्रीमती गुंजन सनाढ्य
विषय विशेषज्ञ (गृह विज्ञान)

डॉ. राकेश कुमार बैरवा
सह आचार्य (शस्य विज्ञान)

डॉ. अरविन्द नागर
विषय विशेषज्ञ (उद्यान विज्ञान)

डॉ. मुकेश चौधरी
तकनीकी सहायक

सुश्री सरिता
तकनीकी सहायक

प्रकाशक
वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष
कृषि विज्ञान केन्द्र, कोटा

वर्ष : 2024

मुद्रक : डामयण्ड प्रिन्टर्स, नई धानमण्डी, कोटा

कृषि विश्वविद्यालय, कोटा

बोरखेड़ा, बारां रोड़, कोटा 324001 (राज.)

डॉ. ए. के. व्यास
कुलपति

संदेश

पिछले कुछ वर्षों में भारतीय कृषि परिदृश्य में क्रान्तिकारी बदलाव देखने को मिल रहा है। कृषि अपने परम्परागत "खेत–खलिहान" के दायरे से निकलकर व्यवसाय के क्षेत्र में प्रवेश कर रही है। कृषि एवं इससे सम्बद्ध क्षेत्रों जैसे उद्यानिकी, डेयरी, कुक्कुट पालन, मधुमक्खी पालन, बकरी पालन, मशरूम उत्पादन, खाद्य प्रसंस्करण आदि में उद्यमिता विकास की विपुल सम्भावनाऐं हैं।

कृषि में उद्यमिता विकास के कारण सामान्य कृषक को उत्पादक से उद्यमी बनने का अवसर प्राप्त हो रहा है। कृषक, ग्रामीण युवा एवं महिलाऐं कौशल विकास तथा नवाचारों के माध्यम से कृषि उद्यम स्थापित कर रहे हैं। विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केन्द्र, कोटा ने विगत एक दशक में उद्यमिता विकास के क्षेत्र में बहुत ही उत्साहजनक प्रयास किये हैं। विगत एक दशक में केंद्र से प्रशिक्षण प्राप्त कर सैकड़ों युवाओं ने कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्रों, विशेषतः खाद्य प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन में अपने उद्यम स्थापित किए हैं तथा प्रतिवर्ष 4.0 से 25.0 लाख तक आय प्राप्त कर रहे हैं।

मुझे प्रसन्नता है कि केन्द्र के प्रयासों से कृषि की विभिन्न विधाओं में स्थापित उद्यमियों की सफलता की कहानियों का एक संकलन "सफल कृषि उद्यमी" शीर्षक से प्रकाशित किया जा रहा है।

मैं केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र सिंह एवं समस्त वैज्ञानिकों को इस प्रकाशन हेतु बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह प्रकाशन ग्रामीण युवाओं, कृषकों, कृषक महिलाओं व प्रसार कार्यकर्ताओं आदि के लिए उपयोगी व प्रेरणास्पद सिद्ध होगा।

21 जून, 2024
कोटा

(अभय कुमार व्यास)

प्रसार शिक्षा निदेशालय

कृषि विश्वविद्यालय, कोटा

डॉ. एस.के. जैन
निदेशक, प्रसार शिक्षा

प्राक्कथन

कृषि विश्वविद्यालय, कोटा के प्रसार शिक्षा निदेशालय के अंतर्गत छः कृषि विज्ञान केंद्र : कोटा, बूंदी, बाराँ, झालावाड, करौली तथा सवाई माधोपुर जिलों में कार्यरत है। ये कृषि विज्ञान केन्द्र जिले में अग्रिम पंक्ति प्रसार संस्थान के रूप में कार्य कर रहे हैं तथा कृषकों तक कृषि की नवीन तकनीकी के हस्तांतरण के साथ–साथ ग्रामीण युवाओं एवं महिलाओं में उद्यमिता विकास के कार्य में संलग्न है।

विश्वविद्यालय का कृषि विज्ञान केन्द्र, कोटा विगत कई वर्षों से कृषकों एवं अन्य हितधारकों को उद्यमिता एवं कौशल विकास हेतु प्रशिक्षण, सलाह एवं सहयोग प्रदान कर रहा है। केन्द्र से प्रशिक्षण प्राप्त कर जिले के बहुत से युवाओं/महिलाओं ने नवाचार कर कृषि की विभिन्न विधाओं विशेषतः खाद्य प्रसंस्करण में अपने स्वतंत्र उद्यम स्थापित कर लिये है तथा इनके उत्पाद ऑनलाईन मार्केटिंग प्लेटफार्म के माध्यम से देशभर में उपलब्ध हो रहे है जिससे ये अच्छी आय अर्जित कर रहें है ।

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि कृषि विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा केन्द्र से प्रशिक्षित उद्यमियों की सफलता की कहानियों का एक संकलन "सफल कृषि उद्यमी" का प्रकाशन किया जा रहा है जिसमें विभिन्न कृषि उद्यमों यथा सोया प्रसंस्करण, मधुमक्खी पालन, फल एवं सब्जी प्रसंस्करण, डेयरी, सब्जी उत्पादन, मशरूम उत्पादन आदि के सफल उद्यमियों की सफलता की कहानियाँ सम्मिलित की गई है। मुझे आशा है कि यह पुस्तिका कृषकों, ग्रामीण युवाओं, महिलाओं एवं अन्य हितधारकों हेतु उपयोगी सिद्ध होगी।

21 जून, 2024
कोटा

(एस.के. जैन)

कृषि विज्ञान केन्द्र, कोटा
प्रसार शिक्षा निदेशालय
कृषि विश्वविद्यालय, कोटा

प्रस्तावना

कृषि विज्ञान केन्द्र (केवीके) देश के विभिन्न जिलो में कृषि विस्तार संस्थानों के रूप में कार्यरत है। यह जिले में किसानों के लिए कृषि एवं संबद्ध उद्यमों की स्थान–विशिष्ट प्रौद्योगिकियों के मूल्यांकन, शोधन और प्रसार केंद्रित ज्ञान और संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करते हैं। केवीके, कृषि उत्पादकता बढ़ाने, टिकाऊ कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने, नवीनतम ज्ञान और तकनीकियों के साथ किसानो को सशक्त बनाने के उद्देश्य से गतिविधियो की एक विस्तृत श्रंखला में संलग्न हैं। केवीके की विशिष्ट गतिविधियों में अग्रिम पंक्ति प्रर्दशन, प्रशिक्षण कार्यक्रम, अग्रिम पंक्ति प्रसार गतिविधि, बीज उत्पादन, कृषि प्रसंस्करण, किसान मेले, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, महिला सशक्तिकरण आदि से किसानों की आजीविका में सुधार, कृषि स्थिरता को बढ़ाना तथा संबधित क्षेत्रों में आधुनिक एवं कुशल कृषि पद्धतियों को अपनाने की सुविधा प्रदान करना आदि लक्ष्य शामिल हैं। केवीके, कृषि अनुसंधान संस्थानों और कृषकों के बीच सेतु का काम करते हुए नवीन कृषि प्रौद्योगिकियों, अद्यतन कृषि ज्ञान, तकनीक कौशल एवं नई जानकारियों का प्रसार करते हैं।

कृषि विज्ञान केन्द्र, कोटा वर्ष 1992 से जिले में कृषि ज्ञान एवं संसाधन केन्द्र के रूप में कार्यरत हैं। केन्द्र जिले में विभिन्न फसलों की उत्पादकता एवं गुणवत्ता बढ़ाने, लागत कम करने, नई कृषि तकनीकियों को अपनाने एवं इनके प्रसार को बढ़ावा देने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा हैं। केन्द्र द्वारा खाद्य प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन, मधुमक्खी पालन, जैविक खेती, डेयरी फार्मिंग, बकरी पालन, मशरूम उत्पादन एवं संरक्षित खेती आदि विषय पर कौशल विकास प्रशिक्षण आयोजित कर ग्रामीण युवाओं की आय बढ़ाने में एवं उन्हें स्वरोजगार से जोड़ने का कार्य किया जा रहा हैं।

कृषि विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा जिले के विभिन्न कृषि एवं सम्बद्ध उद्यमों में कार्यरत कृषि उद्यमियों की सफलता की कहानियों का संकलन कर ''सफल कृषि उद्यमी'' पुस्तिका का प्रकाशन किया जा रहा हैं। यह पुस्तिका अन्य ग्रामीण युवाओं, किसानों एवं अन्य हितधारकों को प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

21 जून, 2024
कोटा

(महेन्द्र सिंह)
वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष

अनुक्रमणिका (Index)

क्र.सं. S.No.	शीर्षक Title	पृष्ठ संख्या Page No.
1.	फल प्रसंस्करण : एक रोजगारोन्मुखी व्यवसाय	1
	Fruit Processing: An Employment Oriented Business	3
2.	मोटे अनाज का प्रसंस्करण : एक लाभदायक कृषि उद्यम	5
	Millets Processing : A Profitable Agri-enterprise	7
3.	सोयाबीन प्रसंस्करण : नवोन्मेषी कृषि उद्यम	9
	Soybean Processing : Innovative Agriculture Enterprise	11
4.	मधुमक्खी पालन : एक सफल कृषि उद्यम	13
	Beekeeping: A Successful Agriculture Enterprise	15
5.	समन्वित कृषि प्रणाली : सतत आय की कुंजी	17
	Integrated Farming System: Key to Sustainable Income	19
6.	दुगुनी आय हेतु डेयरी फार्मिंग	21
	Dairy Farming for Doubling Income	23
7.	अतिरिक्त आय हेतु बकरी पालन	25
	Goat Rearing for Additional Income	27
8.	जैविक खेती: कम लागत–अधिक आय	29
	Organic Farming: Low Cost-High Profit	31
9.	बागवानी : किसान समृद्धि की कहानी	33
	Horticulture: Story of Farmer Prosperity	35
10.	संरक्षित खेती : आय सर्जन का अच्छा विकल्प	37
	Protected Cultivation: Good Option for Income Generation	39
11.	सब्जी उत्पादन से किसान बनें मालामाल	41
	Farmers Become Rich from Vegetable Production	43
12.	वर्मीकम्पोस्टिंग : अपशिष्ट से आय	45
	Vermicomposting : Waste to Wealth	47
13.	मशरूम उत्पादन : अतिरिक्त आय का स्त्रोत	49
	Mushroom Production : Source of Additional Income	51

1. फल प्रसंस्करण : एक रोजगारोन्मुखी व्यवसाय

नाम : श्रीमती वन्दना गौड़
पति का नाम : श्री धर्मवीर सिंह
पता : कुन्हाड़ी, कोटा (राज.)
मोबाईल न. : 7014211537

फल प्रसंस्करण तकनीकी : स्कवैश

फल
↓
धुलाई एवं छँटाई
↓
रस निकालना एवं छानना
↓
सिरप की तैयारी
(शर्करा घुलने के लिए गर्म करना)
↓
रस के साथ मिलाना
↓
परिरक्षक मिलाना
(0.6 ग्राम केएमएस या 1.0 ग्राम सोडियम बेंजोएट प्रति लीटर स्क्वैश)
↓
बॉटलिंग
↓
कैपिंग
↓
भंडारण

स्क्वैश प्रसंस्करण का आर्थिक विश्लेषण : (80 कि.ग्रा. प्रतिदिन)

फल प्रसंस्करण प्लांट लागत	: 6.00 लाख
फल प्रसंस्करण	: 80 कि.ग्रा. प्रतिदिन
वार्षिक स्क्वैश उत्पादन	: 240 क्विं.
औसत स्क्वैश विक्रय मूल्य	: 120/कि.ग्रा.
वार्षिक आय	: 28.80 लाख
कुल वार्षिक लागत	: 18.00 लाख
कुल वार्षिक शुद्ध आय	: 10.80 लाख
लाभ लागत अनुपात	: 1.60

कृषि विज्ञान केन्द्र का योगदान

खाद्य पदार्थो में पोषक तत्वों को सुरक्षित रखने और उसे खराब होने से बचाने के लिए खाद्य प्रसंस्करण वर्तमान समय की राष्ट्रीय मांग है। केन्द्र द्वारा युवाओं के उद्यमिता विकास के लिए फल और सब्जी प्रसंस्करण (स्क्वैश, जैम, जेली, अचार आदि) पर कौशल विकास प्रशिक्षण आयोजित किये जाते है।

मूल गतिविधि

श्रीमती वंदना गौड़ कृषक पृष्ठभूमि वाली एक शिक्षित महिला हैं, उन्होंने खाद्य प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन पर कौशल विकास कार्यक्रम के तहत केवीके, कोटा से वर्ष 2018 में एक माह का प्रशिक्षण प्राप्त किया और 6.00 लाख रुपये की लागत से फल और सब्जी प्रसंस्करण इकाई की स्थापना की। वर्तमान में यह नींबू, संतरा, आंवला, आम का प्रसंस्करण कर रही हैं, और प्रतिवर्ष औसतन 240.00 क्विंटल स्क्वैश, कैंडी और अचार आदि प्रसंस्कृत उत्पाद को स्वयं की ब्रांडिंग पौष्टिक फूड प्रोडक्ट्स के नाम से मार्केटिंग कर औसत 28.80 लाख रूपये प्रति वर्ष सकल आय प्राप्त कर रही हैं।

वर्ष 2023-24 में औसत फल स्कवैश उत्पादन, आय और लाभ लागत अनुपात

उत्पादन (क्विं.)	सकल आय (₹ लाख में)	सकल लागत (₹ लाख में)	शुद्ध आय (₹ लाख में)	लाभ लागत अनुपात
240.00	28.80	18.00	10.80	1.60

अन्य किसानों पर सफलता का असर

एक दर्जन से अधिक युवा फल प्रसंस्करण इकाई स्थापित कर प्रतिवर्ष 5.00 से 10.00 लाख रुपये सकल आय कमा रहे है तथा यह उद्यमी 1–3 ग्रामीण युवाओं को रोजगार भी प्रदान कर रहे हैं।

पुरस्कार

श्रीमती गौड़ को फल प्रसंस्करण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु विश्वविद्यालय से प्रशंसा प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ है। डीडी किसान चैनल नई दिल्ली ने उन्हें केवीके, कोटा के सफल कृषि उद्यमियों में से एक के रूप में चुना और एक डॉक्यूमेन्ट्री तैयार कर 2 अगस्त 2020 को एग्रो फैक्ट्री में प्रसारित किया गया।

केन्द्र के तकनीकी मार्गदर्शन में स्थापित फल प्रसंस्करण इकाई

नाम	पता	मोबाईल नं.	वार्षिक सकल आय (₹ लाख में)
श्री वीरेन्द्र शर्मा	राजश्री उत्पाद, रानपुर, कोटा	9414189839	9.00 – 10.00
श्री हेमन्त दीक्षित	हेल्दी एवं हाइजीन फूड्स, नयापुरा, कोटा	9166471757	9.00 – 10.00
श्री कृष्ण कुमार	कान्हा खाद्य उत्पाद, सुल्तानपुर, कोटा	9929345151	9.00 – 10.00
श्रीमती सुमन शर्मा	कृषि खाद्य उत्पाद, नयापुरा, कोटा	9460853746	6.00 – 07.00
श्रीमती हेमलता	तन्वी खाद्य उत्पाद, कोटा	9461101382	5.00 – 06.00

1. Fruit Processing : An Employment Oriented Business

Name : Mrs. Vandana Gaur
Husband's Name : Mr. Dharamveer Singh
Address : Kunhari, Kota (Raj.)
Mobile No. : 7014211537

Fruit Processing Technology : Squash

Fruits
↓
Washing and Trimming
↓
Juice Extraction and Straining
↓
Preparation of syrup
(sugar + water + acid, heating just to dissolve)
↓
Mixing with juice
↓
Addition of preservative
(0.6 g KMS or 1.0 g sodium benzoate/litre squash)
↓
Bottling
↓
Capping
↓
Storage

Economics of Squash Processing : (80 kg per day)

Fruit processing plant cost	:	₹6.00 lakh
Fruit processing	:	80 kg per day
Annual fruit processing	:	240 q
Annual squash production	:	240 q
Average sale rate of squash	:	₹120 per liter
Annual gross income	:	₹ 28.80 lakh
Annual expenditure	:	₹ 18.00 lakh
Annual net income	:	₹ 10.80 lakh
Benefit cost ratio (BCR)	:	1.60

Role of KVK

Food processing is a national demand of present time to preserve the nutrients in food products and prevent it from spoiling. The center organizes skill development trainings on fruit and vegetable processing (squash, jam, jelly, pickle etc.) for youth to entrepreneurship development.

Core Activity

Mrs. Vandana Gaur is an educated woman with farming background. She received one month skill development training on food processing and value addition from KVK, Kota in the year 2018 and established fruit and vegetable processing unit with cost of Rs 6.00 lakh. Presently she is processing lemon, mandarin, orange, anola, mango and producing an average of 240.00 q of squashes, candy, and pickles annually. She is marketing these processed products under her own branding "Paushtik Food Products" and earning gross income of Rs. 28.80 lakh per year.

Average production, income and cost-benefit ratio of fruit squash during 2023-24

Production (q)	Gross income (₹ in lakh)	Gross Cost (₹ in lakh)	Net Profit (₹ In lakh)	B:C ratio
240.00	28.80	18.00	10.80	1.60

Spread effects on fellow farmers

More than one dozen youth established fruit processing units and earning 5.00 to 10.00 lakh gross income annually and these entrepreneurs now generating employment for 1-3 rural youth.

Awards

Mrs. Gaur has received an appreciation certificate from the university for her excellent work in the field of fruit processing. DD Kisan channel New Delhi choose her as one of the successful agri-entrepreneurs of KVK, Kota and prepared a documentary and broadcasted by the channel on 2nd August 2020 in Agro Factory.

Fruit processing unit established under technical guidance of the center

Name	Address	Mobile No.	Annual Gross Income (₹ in lakh)
Mr. Virendra Sharma	Rajshree Utpad, Ranpur, Kota	9414189839	9.00-10.00
Mr. Hemant Dixit	Healthy & Hygiene Foods, Nayapura, Kota	9166471757	9.00-10.00
Mr. Krishan Kumar	Kanha Food Products, Sultanpur, Kota	9929345151	9.00-10.00
Mrs. Suman Sharma	Rishi Food Product, Nayapura, Kota	9460853746	6.00-07.00
Mrs. Hemlata	Tanvi Food Product, Kota	9461101382	5.00-06.00

2. मोटे अनाज का प्रसंस्करण : एक लाभदायक कृषि उद्यम

नाम : श्रीमती बेबी रानी
पति का नाम : श्री रवीन्द्र सैनी
पता : बोरखेड़ा, कोटा (राज.)
मोबाईल नं. : 7742004939

मोटे अनाज प्रसंस्करण तकनीकी

मोटे अनाज को रात भर पानी में भिगोना
↓
अनाज को ट्रे पर फैलाना
↓
72 घंटे तक लगातार अन्तराल पर पानी का छिड़काव
↓
अंकुरित मोटे अनाज को सुखाकर, पीसकर छानना
↓
मोटे अनाज से विभिन्न प्रसंस्कृत उत्पाद तैयार करना
↓
बिस्किट, कुकीज, गजक, नमकीन, मठरी

मोटे अनाज प्रसंस्करण का आर्थिक विश्लेषण : (20 कि.ग्रा. प्रतिदिन)

मोटे अनाज प्रसंस्करण प्लांट लागत	:	₹ 7.00 लाख
मोटे अनाज प्रसंस्करण	:	20 कि.ग्रा. प्रतिदिन
वार्षिक मोटे अनाज प्रसंस्करण	:	60 क्विं.
वार्षिक मोटे अनाज प्रसंस्कृत उत्पाद उत्पादन	:	80 क्विं.
मोटे अनाज प्रसंस्कृत उत्पादों की औसत विक्रय दर	:	₹ 200 प्रति कि.ग्रा.
वार्षिक सकल आय	:	₹ 16.00 लाख
वार्षिक लागत	:	₹ 9.00 लाख
वार्षिक शुद्ध आय	:	₹ 7.00 लाख
लाभ लागत अनुपात	:	1.77

कृषि विज्ञान केन्द्र का योगदान

मोटे अनाज में उच्च सूक्ष्म पोषक तत्व, आहार फाइबर और कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स के साथ बेहतर पोषण गुण होते हैं। केन्द्र द्वारा उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए युवाओं को मोटे अनाज प्रसंस्करण (स्नैक्स, बिस्किट, माल्टेड उत्पाद, आदि) पर कौशल विकास प्रशिक्षण आयोजित किये जाते है।

मूल गतिविधि

श्रीमती बेबी रानी ने केन्द्र से एक माह का खाद्य प्रसंस्करण प्रशिक्षण 2020 में प्राप्त किया तथा मोटे अनाज प्रसंस्करण इकाई स्थापित कर प्रसंस्कृत उत्पाद जैसे– ज्वार कुकीज, मिक्स मोटा अनाज कुकीज, बाजरा पापड़, बाजरा गजक आदि बनाना शुरू किया। वर्तमान में 80.00 क्विंटल मोटा अनाज प्रसंस्कृत उत्पाद तैयार कर स्वयं सहायता समूह की ब्राडिंग शिव शक्ति मिलेट प्रोडक्ट्स के नाम से मार्केटिंग कर वार्षिक औसत 16.00 लाख रूपये सकल आय अर्जित कर रही हैं।

वर्ष 2023-24 में मोटे अनाज प्रसंस्कृत उत्पाद का औसत उत्पादन, आय और लागत-लाभ अनुपात

उत्पादन (क्विं.)	सकल आय (₹ लाख में)	सकल लागत (₹ लाख में)	शुद्ध आय (₹ लाख में)	लाभ लागत अनुपात
80.00	16.00	9.00	7.00	1.77

अन्य किसानों पर सफलता का असर

एक दर्जन से अधिक युवाओं ने मोटे अनाज प्रसंस्करण इकाई स्थापित की तथा यह उद्यमी 1–3 ग्रामीण युवाओं को रोजगार भी प्रदान कर रहे हैं।

पुरस्कार

श्रीमती बेबी रानी को मोटे अनाज प्रसंस्करण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु केवीके, कोटा द्वारा सर्वश्रेष्ठ महिला उद्यमी पुरस्कार प्राप्त हुआ एवं स्थानीय न्यूज पेपर में उनकी सफलता की कहानी भी प्रकाशित हुई।

कृषि विज्ञान केन्द्र से ट्रेनिंग लेकर शुरू किया खुद का कारोबार

कई महिलाएं मोटा अनाज से केक, लड्डू व ब्रेड बना बेच रहीं...दूसरों को भी बना रहीं आत्मनिर्भर

patrika.com

कोटा. आज महिलाएं किसी भी मामले में पुरुषों से कम नहीं हैं। वे खुद सक्षम होने के साथ-साथ दूसरी महिलाओं को भी सक्षम बना रही हैं। यह कहानी भी कुछ ऐसी ही महिलाओं की है, जो मिलेट्स (मोटा अनाज) में कुकीज व अन्य उत्पाद बनाकर बेच रही हैं और आत्मनिर्भर बन रही हैं। इन उत्पादों की बाजार में अच्छी मांग है।

कोटा कृषि विज्ञान केन्द्र इन महिलाओं को मोटा अनाज से खाद्य पदार्थ बनाने का प्रशिक्षण दे रहा है। केन्द्र की वैज्ञानिक गुंजन सनाढ्य ने बताया कि वर्ष 2023 इंटरनेशनल मिलेट्स ईयर घोषित किया गया था। हमारे केंद्र में महिलाओं को मिलेट्स से जुड़े उत्पाद बनाने का प्रशिक्षण दिया जाता है। इसके बाद कई महिलाएं मिलेट्स से केक, बिस्किट, इडली-डोसा, लड्डू व ब्रेड बना कर बेच रही हैं।

मिलेट्स से तैयार उत्पाद

केस: 1 खेड़ली फाटक निवासी हेमलता सोनगरा ने बताया कि वर्ष 2022 में केवीके में एक माह की ट्रेनिंग के बाद घर पर मिलेट्स उत्पाद बनाना शुरू किया। ज्वार, बाजरा के लड्डू, बिस्किट, मठरी, नमकीन, दलिया बनाया। पहले इन्हें बेचने में दिक्कत आई, लेकिन अब घर बैठे ऑर्डर मिलने लगे हैं।

केस: 2 जयश्री विहार निवासी बेबी रानी ने ट्रेनिंग के बाद वर्ष 2021 में मिलेट्स के उत्पाद बनाना शुरू किया। मिलेट्स में ज्वार, बाजरा, रागी से 8 तरीके के बिस्किट, गजक व बाजरे के पापड़ बना रही हैं। अब घर बैठे ऑनलाइन ऑर्डर मिल रहे हैं। हर महीने 35 से 40 हजार रुपए की कमाई हो रही है।

केस: 3 दादाबाड़ी निवासी स्मिता औदिच्य ने वर्ष 2022-23 में मिलेट्स से इंस्टेंट मिक्स तैयार किया। इसमें बाजरा व केले से इंस्टेंट मिक्स बनाया जाता है। इससे पकौड़ी, इडली, चीला सहित अन्य खाने की चीज हाथों हाथ बनाई जा सकती हैं। प्रति माह 60 से 70 हजार रुपए कमा रही हैं।

केस: 4 दादाबाड़ी निवासी मनीषा त्रिवेदी ने प्रशिक्षण के बाद वर्ष 2022 में मिलेट्स पर काम शुरू किया। राजगीरा, बाजरा, ज्वार से स्नैक्स, बिस्किट, नमकीन, मठरी, चिवड़ा, केक, फलाहारी केक सहित अन्य उत्पाद बना रही हैं। इन उत्पादों को बेचकर प्रतिमाह 1 लाख रुपए तक कमाई कर रही हैं।

केन्द्र की तकनीकी मार्गदर्शन में स्थापित मोटे अनाज प्रसंस्करण इकाई

नाम	पता	मोबाईल नं.	वार्षिक सकल आय (₹ लाख में)
श्री अशोक जैन	इशिमा श्रीअन्न, गंधीफली, कोटा	6367040389	30.00 – 35.00
सुश्री स्मिता औदिच्य	मैजिक फूड्स, दादाबाड़ी, कोटा	9958024666	20.00 – 25.00
श्रीमती मनीषा त्रिवेदी	उमांश मार्केटिंग, दादाबाड़ी, कोटा	7300048686	16.00 – 17.00
श्रीमती परिधि गुप्ता	बेकर्स बाइट, तीनबत्ती सर्किल, कोटा	7976358169	12.00 – 15.00
श्रीमती कविता जैन	जैन फूड्स इकाई, रेलवे स्टेशन, कोटा	9887399192	08.00 – 10.00

2. Millets Processing : A Profitable Agri-enterprise

Name : Mrs. Baby Rani
Husband's Name : Mr. Ravindra Saini
Address : Borkhera, Kota (Raj.)
Mobile No. : 7742004939

Millets Processing Technology

Millets are immersed in water overnight
↓
Grains are spread on trays
↓
Keep wet by frequent spraying of water for 72 hrs.
↓
Germinated millets is dried and grind to pass sieving 80 meshes
↓
Prepare various processed products of millets
↓
Biscuit, Cookies, Gajak, Namkeen, Mathari

Economics of Millets Processing : 20 kg per day

Millets processing plant cost	:	₹7.00 lakh
Millets processing	:	20 kg per day
Annual millets processing	:	60 q
Annual millets processed product production	:	80 q
Average sale rate of millet products	:	₹ 200 per kg
Annual gross Income	:	₹16.00 lakh
Annual expenditure	:	₹ 9.00 lakh
Annual net income	:	₹7.00 lakh
Benefit cost ratio (BCR)	:	1.77

Role of KVK

Millets have superior nutritional properties with high micronutrients, dietary fiber and low glycemic index. The centre provides skill development trainings on millet processing (snacks, biscuit, malted products, etc.) for youth to promote entrepreneurship and motivate them to start their enterprises.

Core Activity

Mrs. Baby Rani received one month training on food processing organized by the center in 2020 and established a millet processing unit & prepared processed products like jowar cookies, mixed millet cookies, millet papad, millet gajak etc. At present, by producing 80.00 q of processed millet products and marketing these products under the self-help group branding name of Shiv Shakti Millet Products, she is earning an annual average gross income of Rs. 16.00 lakh.

Average production, income, and cost-benefit ratio of processed millet products during 2023-24

Production (q)	Gross income (₹ in lakh)	Gross Cost (₹ in lakh)	Net Profit (₹ In lakh)	B:C ratio
80.00	16.00	9.00	7.00	1.77

Spread effects on fellow farmers

More than one dozen youth established millets processing units and these entrepreneurs are now generating employment for 1-3 rural youth.

Awards

Mrs. Baby Rani has received best women entrepreneur award from the KVK Kota for her excellent work in the field of millets processing and her success story was published in local newspaper.

कृषि विज्ञान केन्द्र से ट्रेनिंग लेकर शुरू किया खुद का कारोबार

कई महिलाएं मोटा अनाज से केक, लड्डू व ब्रेड बना बेच रहीं...दूसरों को भी बना रहीं आत्मनिर्भर

Millets processing unit established under technical guidance of the center

Name	Address	Mobile No.	Annual Gross Income (₹ in lakh)
Mr. Ashok Jain	Ishima Shri Ann, Gandifali, Kota	6367040389	30.00 – 35.00
Ms. Smita Audichya	Magic Foods, Kota	9958024666	20.00 – 25.00
Mrs. Manisha Trivedi	Umansh Marketing, Kota	7300048686	16.00 – 17.00
Mrs. Paridhi Gupta	Bakers Bite, Kota	7976358169	12.00 – 15.00
Mrs. Kavita Jain	Jain food product unit, Kota	9887399192	08.00 – 10.00

3. सोयाबीन प्रसंस्करण : नवोन्मेषी कृषि उद्यम

नाम : श्री विक्रम सिंह हाड़ा
पिता का नाम : श्री मोहन सिंह
पता : शिवपुरा, कोटा (राज.)
मोबाईल न. : 9636375029

सोयाबीन प्रसंस्करण तकनीकी : सोया पनीर

50 कि.ग्रा. सोयाबीन के पूरे दाने की सफाई
↓
300 लीटर पानी में 6 घण्टे भिगोकर धुलाई करना
↓
300 लीटर पानी के साथ ग्रांइडर में पिसाई
↓
20 मिनट तक 100°C तापमान पर सोयाबीन दूध को उबालना
↓
300 लीटर दूध को छानना
↓
300 ग्राम सिट्रिक ऐसिड द्वारा दूध को फाडना
↓
पनीर प्रेसर द्वारा 30–40 मिनट दबाना
↓
50 कि.ग्रा. सोयाबीन से 65–70 कि.ग्रा. सोया पनीर (टोफू) तैयार

सोया पनीर का आर्थिक विश्लेषण : 50 कि.ग्रा. प्रतिदिन

सोया पनीर प्लांट लागत	:	₹ 8.00 लाख
सोयाबीन प्रसंस्करण (प्रतिवर्ष)	:	150 क्विं.
सोया पनीर उत्पादन प्रतिवर्ष	:	195 क्विं.
औसत सोया पनीर विक्रय मूल्य	:	₹ 120/कि.ग्रा.
वार्षिक आय	:	₹ 23.40 लाख
कुल वार्षिक लागत	:	₹ 15.60 लाख
कुल वार्षिक शुद्ध आय	:	₹ 7.80 लाख
लाभ लागत अनुपात	:	1.50

कृषि विज्ञान केन्द्र का योगदान

सोयाबीन का उपयोग सोया दूध से लेकर टोफू (सोया पनीर), सोया दही, सोया नट्स और विभिन्न बेकरी–आधारित उत्पादों को तैयार करने के लिए किया जा रहा है। सोयाबीन के स्वास्थ्य लाभों को ध्यान में रखते हुए, केंद्र द्वारा व्यावसायिक प्रशिक्षण, मार्गदर्शन और तकनीकी सहायता के माध्यम से सोया प्रसंस्करण के क्षेत्र में युवाओं में कौशल विकास करने की एक अनुठी पहल की गई।

मूल गतिविधि

श्री विक्रम सिंह हाड़ा सोयाबीन उत्पादक किसान है। उन्होंने केन्द्र से वर्ष 2014 में खाद्य प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन पर एक माह का कौशल विकास प्रशिक्षण लेकर 8.00 लाख रुपये की लागत से सोया पनीर प्रसंस्करण इकाई की स्थापना की। वर्तमान में औसतन 600 क्विंटल सोया पनीर का प्रतिवर्ष उत्पादन कर स्वयं की ब्राण्ड ''भव्या सोया पनीर'' के नाम से छात्रावासों में सप्लाई कर रहे हैं, जिससे प्रतिवर्ष 72.00 लाख रूपये सकल आय प्राप्त हो रही है।

वर्ष 2023-24 में औसत सोया पनीर उत्पादन, आय और लाभ लागत अनुपात

उत्पादन (क्विं.)	सकल आय (₹ लाख में)	सकल लागत (₹ लाख में)	शुद्ध आय (₹ लाख में)	लाभ लागत अनुपात
600.00	72.00	50.40	21.60	1.42

अन्य किसानों पर सफलता का असर

केन्द्र से प्रशिक्षण एवं श्री हाड़ा से प्रेरणा लेकर एक दर्जन से अधिक युवाओं ने सोया पनीर उत्पादन इकाई स्थापित की है, जिससे उन्हें प्रतिवर्ष 4.0 से 50.00 लाख रुपये की सकल आय प्राप्त हो रही है तथा ये उद्यमी 1–3 ग्रामीण युवाओं को रोजगार भी प्रदान कर रहे हैं।

पुरस्कार

श्री विक्रम सिंह हाड़ा के सोया पनीर प्रसंस्करण के क्षेत्र में किये जा रहे नवोन्मेषी कार्य पर कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार ने एक डोक्यूमेन्ट्री तैयार करवाई है तथा उनके उत्कृष्ट कार्य के लिये विश्वविद्यालय एवं अन्य संस्थाओं द्वारा प्रशंसा पत्र प्रदान किये गये।

केन्द्र के तकनीकी मार्गदर्शन में स्थापित मुख्य सोया पनीर इकाई

नाम	पता	मोबाईल नं.	वार्षिक सकल आय (₹ लाख में)
श्री गौरव खण्डेलवाल	रिवा एग्रो फूड़, रंगबाड़ी, कोटा	9261199000	48.00–50.00
श्रीमती रचिनी चौबिसा	माधव सोया, जावद राजसंमद	9783210444	45.00–46.00
श्री मनीष गोस्वामी	सोया गोसाई, केशोरायपाटन, बूंन्दी	9799707048	21.00–22.00
श्री यश चौहान	वेगन फूड, झोटवाड़ा, जयपुर	7065411301	04.00–05.00
श्री सुरेन्द्र हरणीवाल	रेहान्स स्विट उद्योग, पिलानी, झुंझुनु।	9928460936	04.00–05.00

3. Soybean Processing : Innovative Agriculture Enterprise

Name : Mr. Vikram Singh Hada
Father's Name : Mr. Mohan Singh
Address : Shivpura, Kota (Raj.)
Mobile No. : 9636375029

Soybean Processing Technology: Soy Paneer

Cleaning 50 kg whole grain of soybean
↓
Soaking in 300-liter water for 6 hrs. and cleaning
↓
Grinding with adding 300-liter water
↓
Boiling of soya milk 20 min at 100ºC
↓
Collect 300 liter soya milk and add 300 g citric acid
↓
Pressing in Paneer Press for 30-40 min
↓
65-70 kg Soy Paneer (Tofu) prepared from 50 kg soybean

Economics of Soy Paneer : (50 Kg per day)

Soya paneer plant cost	:	₹ 8.00 lakh
Annual soybean processing	:	150 q
Annual soy paneer production	:	195 q
Average sale rate of soy paneer	:	₹ 120 per kg
Annual gross income	:	₹ 23.40 lakh
Annual expenditure	:	₹ 15.60 lakh
Annual net income	:	₹ 7.80 lakh
Benefit cost ratio (BCR)	:	1.50

Role of KVK

The soybean is being used to prepare a plethora of different products ranging from soy milk to tofu (soy paneer), soy curd, soy nuts, and various bakery-based products, etc. Keeping the health benefits of soybean into consideration, the center has taken an initiative by developing agripreneurs in the field of soya processing through vocational trainings, mentoring and technical support.

Core Activity

Mr. Vikram Singh Hada is a soybean producing farmer. He received one month skill development training on food processing and value addition from KVK, Kota in 2014 and established a soya paneer processing unit with cost of Rs. 8.00 lakhs. At present, he is processing an average of 600 q of soy paneer per year and marketing paneer under his own branding "Bhavya Soya Paneer" around hostels and coaching institutes and earning gross income of Rs. 72.00 lakh per year.

Average production, income and cost-benefit ratio of Soy Paneer during 2023-24

Production (q)	Gross income (₹ in lakh)	Gross Cost (₹ in lakh)	Net Profit (₹ In lakh)	B:C ratio
600.00	72.00	50.40	21.60	1.42

Spread effects on fellow farmers

More than one dozen youth established soy paneer units after taking training & inspiration from Mr. Hada and are earning Rs. 4.00 to 50.00 lakhs annually and these entrepreneurs are generating employment for 1-3 youth.

Awards

Ministry of Agriculture & Farmers Welfare, Govt. of India prepared documentary film of Mr. Vikram Singh Hada for his innovative work in field of soy paneer processing and received appreciation certificates from university and other institution for his excellent work.

Soy paneer unit established under technical guidance of the center

Name	Address	Mobile No.	Annual Gross Income (₹ in lakh)
Mr. Gaurav Khandelwal	Riva Agro Foods, Rangbari, Kota	9261199000	48.00-50.00
Mrs. Rachini Choubisa	Madhav Soya & Food Products, Rajsamand	9783210444	45.00-46.00
Mr. Manish Goswami	Soya Gosai, Keshorai Patan, Bundi	9799707048	21.00-22.00
Mr. Yash Chouhan	Vegan Foods, Jhotwara, Jaipur	7065411301	04.00-05.00
Mr. Surendra Harniwal	Rehans Sweet Udhyog, Pilani, Jhunjhunu	9928460936	04.00-05.00

4. मधुमक्खी पालन : एक सफल कृषि उद्यम

नाम : श्री नरेन्द्र मालव
पिता का नाम : श्री कालूलाल मालव
पता : डंगावद, हरिपुरा, कोटा (राज.)
मोबाईल न. : 8947863978

मधुमक्खी पालन तकनीकी

मधुमक्खी पालन किसानों की आय दुगुनी करने का एक अच्छा विकल्प है। मधुमक्खी पालन कृषि आधारित एक लाभकारी उद्यम है। इससे खेतिहर किसान, महिलाऐ, श्रमिक, एवं बेरोजगार ग्रामीण युवा कम समय व कम लागत में अधिक लाभ प्राप्त कर सकते है।

मधुमक्खी पालन इकाई का आर्थिक विश्लेषण (100 कॉलोनी)

स्थापना खर्च	:	₹ 4.00 लाख
कुल शहद उत्पादन प्रति वर्ष	:	3500 कि.ग्रा.
शहद विक्रय दर	:	₹ 130 प्रति कि.ग्रा.
शहद उत्पादन से वार्षिक आय	:	₹ 4.55 लाख
अन्य उत्पादो से वार्षिक आय	:	₹ 1.00 लाख
कुल वार्षिक लागत	:	₹ 2.00 लाख
कुल वार्षिक शुद्ध आय	:	₹ 3.55 लाख
लाभ लागत अनुपात	:	2.77

कृषि विज्ञान केन्द्र का योगदान :

मधुमक्खी पालन से किसान को शहद, मोम, प्रोपोलिश, पराग, रॉयल जेली आदि के साथ में मधुमक्खियों द्वारा फसलों में परागण से फसल उत्पादन में वृद्धि होती है। केन्द्र द्वारा मधुमक्खी पालन विषय पर व्यावसायिक प्रशिक्षण आयोजित कर जिले में मधुमक्खी पालन को बढ़ावा एवं ग्रामीण युवाओं को कृषि उद्यम से जोड़ा जा रहा है।

मूल गतिविधि :

कोटा जिले के श्री नरेन्द्र मालव गांव डंगावद ने वर्ष 2013 में केन्द्र द्वारा आयोजित मधुमक्खी पालन प्रशिक्षण में भाग लिया तथा इसके पश्चात् 25 मधुमक्खी कॉलोनियों से शुरूआत कर वर्तमान में 500 से अधिक कॉलोनियों के साथ मधुमक्खी पालन का व्यवसाय कर रहे है। श्री मालव शहद का प्रसंस्करण कर स्वयं की ब्राण्डिंग ''कोटा शहद'' के नाम से मार्केटिंग कर रहे हैं। यह जिले में दूसरे किसानों के लिए मधुमक्खी पालन के क्षेत्र में प्रेरणास्त्रोत के रूप में कार्य कर रहे है। श्री मालव शहद एवं इसके सह उत्पादों से प्रतिवर्ष 32.50 लाख औसत सकल आय अर्जित कर रहे है।

वर्ष 2023-24 में औसत शहद उत्पादन, आय और लाभ लागत अनुपात (800 कॉलोनी)

उत्पादन (क्विं.)	सकल आय (₹ लाख में)	सकल लागत (₹ लाख में)	शुद्ध आय (₹ लाख में)	लाभ लागत अनुपात
250.00	32.50	13.00	19.50	2.50

अन्य किसानों पर सफलता का असर :

केन्द्र से प्रशिक्षण एवं श्री मालव से प्रेरणा लेकर जिले के 100 से अधिक ग्रामीण युवाओं ने मधुमक्खी पालन को रोजगार के रूप में अपनाकर 5.00–12.00 लाख रूपये औसत सकल आय प्रतिवर्ष कमा रहे है।

पुरस्कार :

श्री मालव को मधुमक्खी पालन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु महिन्द्रा कृषि समृद्धि पुरस्कार, आत्मा द्वारा जिला स्तरीय कृषक प्रशस्ति पत्र एवं अन्य पुरस्कार प्राप्त हुए है।

केन्द्र के तकनीकी मार्गदर्शन में स्थापित मधुमक्खी पालन इकाई

नाम	पता	मोबाईल नं.	वार्षिक सकल आय (₹ लाख में)
श्री रामराज मीणा	दौलतपुरा, इटावा, कोटा	7851819691	10.00–12.00
श्री सुरेन्द्र मीणा	हनुमानपुरा, खातौली, कोटा	8107692122	9.00–10.00
श्री लोकेश कुमार मीणा	बम्बूलिया,दीगोद, कोटा	8094987712	9.00–10.00
श्री हरिओम मेहरा	छत्रपुरा, सांगोद, कोटा	6378083615	8.00–10.00
श्री सत्यनारायण माली	पाडली, पीपल्दा, कोटा	7340385005	5.00–08.00

4. Beekeeping: A Successful Agriculture Enterprise

Name : Mr. Narendra Malav
Father's Name : Mr. Kalulal Malav
Address : Dangawad, Haripura, Kota (Raj.)
Mobile No. : 8947863978

Beekeeping Technology

Beekeeping is a good option for doubling farmers income. It is a profitable agriculture-based enterprise. Farmers, farm women, rural youth, landless labour can get high profit with low cost in short period of time.

Economics of Beekeeping unit (100 colonies):

Establishment cost	:	₹ 4.00 lakh
Annual honey production	:	3500 kg
Average sale rate of honey	:	₹ 130/kg
Annual gross income from honey	:	₹ 4.55 lakh
Annual gross income from other products	:	₹ 1.00 lakh
Annual expenditure	:	₹ 2.00 lakh
Annual net income	:	₹ 3.55 lakh
Benefit cost ratio (BCR)	:	2.77

Role of KVK

Beekeeping provides the farmer with honey, wax, propolis, pollen, royal jelly etc. and also helps in pollination of crops resulting in increase of crop production. The center is promoting beekeeping in the district by organizing skill development training on beekeeping and connecting rural youth with agricultural enterprises.

Core Activity

Mr. Narendra Malav of Dangawad participated in beekeeping training conducted by the centre in the year of 2013 and after that started beekeeping with 25 bee-colonies and currently doing the business of beekeeping with more than 800 colonies. Mr. Malav is processing the honey and marketing it under his own branding name "Kota Sahad". He is acting as a source of inspiration for other farmers in the field of beekeeping in the district. Mr. Malav earning Rs. 32.50 lakh average gross income by selling honey and its by products.

Average production, income and cost-benefit ratio of honey during 2023-24 (800 colonies)

Production (q)	Gross income (₹ in lakh)	Gross Cost (₹ in lakh)	Net Profit (₹ In lakh)	B:C ratio
250.00	32.50	13.00	19.50	2.50

Spread effects on fellow farmers

More than 100 rural youth of the district have adopted beekeeping as employment and are earning Rs. 5.00-12.00 lakh gross income per annum.

Awards

Mr. Malav has received Mahindra Krishi Samriddhi Award, district level appreciation award by ATMA and other awards for his excellent work in the field of beekeeping.

Beekeeping unit established under technical guidance of the center

Name	Address	Mobile No.	Annual Gross Income (₹ in lakh)
Mr. Ramraj Meena	Daulatpura, Itawa, Kota	7551819691	10.00-12.00
Mr. Surndra Meena	Hnaumanpura, Khatoli, Kota	8107692122	9.00-10.00
Mr. Lokesh Kumar Meena	Bambooliya, Digod, Kota	8094987712	9.00-10.00
Mr. Hariom Mehra	Chatrapura, Sangod, Kota	6378083615	8.00-10.00
Mr. Satyanarayan Mali	Padli, Pipalda, Kota	7340385005	05.00-8.00

5. समन्वित कृषि प्रणाली : सतत आय की कुंजी

नाम : श्री घनश्याम यादव
पिता का नाम : श्री जगन्नाथ यादव
पता : सुहाना, दिगोद, कोटा (राज.)
मोबाईल न. : 6376223863

तकनीकी

समन्वित कृषि प्रणाली से अभिप्राय कृषि के विभिन्न उद्यमों जैसे फसल उत्पादन, पशुपालन, फल एवं सब्जी उत्पादन तथा इनसे जुड़ी पूरक इकाईयाँ जैसे केंचुआ खाद, अजोला, नाडेप कम्पोस्ट इत्यादि का समायोजन करके संसाधनों की क्षमता एवं उत्पादकता में वृद्धि करना है।

कृषि विज्ञान केन्द्र का योगदान

जिले में समन्वित कृषि प्रणाली को बढ़ावा देने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। प्रशिक्षण के उपरान्त एवं केन्द्र के तकनीकी मार्गदर्शन में जिले के किसान/ग्रामीण युवा समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल को अपनाकर कम लागत में अधिक आय अर्जित कर रहे हैं।

मूल गतिविधि

कृषि विज्ञान केन्द्र पर वर्ष 2021 में आयोजित प्रशिक्षण उपरान्त एवं तकनीकी मार्गदर्शन से श्री घनश्याम यादव ग्राम सुहाना द्वारा 3.00 है. क्षेत्र में समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल अपनाया गया। इसमें 1.00 है. में अमरूद का बगीचा, 0.50 है. में पपीता, 1.00 है. में आलू एवं अन्तराशस्य तकनीक से नगदी फसलो की खेती कर रहे हैं तथा इनके पास 2 भैंस, 1 गाय तथा 5 बेड़ वर्मीकम्पोस्ट की भी है। इस समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल को अपनाकर यह वार्षिक औसत 11.00 लाख रूपये सकल आय अर्जित कर रहे है।

वर्ष 2023-24 में औसत उत्पादन, आय और लाभ लागत अनुपात

फसल/गतिविधि	इकाई (हे./नं.)	उत्पादन (क्विं.)	सकल आय (₹ लाख में)	सकल लागत (₹ लाख में)	शुद्ध आय (₹ लाख में)	लाभ लागत अनुपात
अमरूद	1.00	210.00	3.15	0.75	2.40	4.20
पपीता	0.50	80.00	1.20	0.40	0.80	3.00
आलू	1.00	320.00	3.30	0.90	2.40	3.66
प्याज	0.50	140.00	2.10	0.50	1.60	4.20
भैंस एवं गाय	3	25.00	1.25	0.62	0.62	2.01

अन्य किसानों पर सफलता का असर

केन्द्र से प्रशिक्षण प्राप्त कर एवं श्री यादव के समन्वित कृषि प्रणाली के ''सुहाना मॉडल'' को अपनाकर जिले के दूसरे किसान भी औसत 4.00–7.00 लाख रूपये सकल आय प्रतिवर्ष कमा रहे है।

पुरस्कार

श्री यादव को समन्वित कृषि प्रणाली के क्षेत्र में उत्कृष्ठ कार्य करने हेतु आत्मा कोटा द्वारा जिला स्तरीय कृषक प्रशस्ति पत्र पुरस्कार, कृषि जागरण नई दिल्ली द्वारा मिलेनियर फार्मर अवार्ड एवं कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा कृषि विज्ञान मेला 2022 में प्रशस्ति पत्र प्राप्त हुआ है।

केन्द्र के तकनीकी मार्गदर्शन में स्थापित समन्वित कृषि प्रणाली इकाई

नाम	पता	मोबाईल नं.	वार्षिक सकल आय (₹ लाख में)
श्री सत्यनारायण यादव	सुहाना,दीगोद, कोटा	9414179545	6.00–7.00
श्री परमानन्द	सुहाना,दीगोद, कोटा	9928476044	5.00–6.00
श्री सुरेश मीणा	राईखेडा, कोटा	8290409774	5.00–6.00
श्री बृजमोहन मीणा	चौमाकोट, कोटा	9928259037	4.00–5.00

5. Integrated Farming System: Key to Sustainable Income

Name : Mr. Ghanshyam Yadav
Father's Name : Mr. Jagnnath Yadav
Address : Suhana, Digod, Kota (Raj.)
Mobile No. : 6376223863

Technology

Integrated farming system is an eco-friendly approach in which integration of various agricultural enterprises like crop production, animal husbandry, fruit and vegetable production and their related supplementary units like vermicompost, Azolla, Nadep compost etc. increasing the efficiency and productivity of resources.

Role of KVK

To promote integrated farming system in the district, training programmes are organized by the center. After completion of training and under technical guidance of the center, farmers/rural youth of the district are earning more income at low cost by adopting integrated farming system.

Core Activity

Mr. Yadav adopted the integrated farming system model in 3.0 ha area after completion of training in 2021 and under technical guidance of the center. He has 1.0 ha guava orchard, 0.5 ha papaya, 1.0 ha under potato and growing vegetables and other cash crop in orchard under intercropping system. He also has 2 buffaloes, 1 cow and 5 beds of vermicompost. He is earning an average gross income of Rs. 11.00 lakh by adopting this integrated farming system model.

Average production, income and cost-benefit ratio of during 2023-24

Crop/ Activity	Unit (ha/No.)	Production (q)	Gross income (₹ in lakh)	Gross Cost (₹ in lakh)	Net Profit (₹ In lakh)	B:C ratio
Guava	1.00	210.00	3.15	0.75	2.40	4.20
Papaya	0.50	80.00	1.20	0.40	0.80	3.00
Potato	1.00	320.0	3.30	0.90	2.40	3.66
Onion	0.50	140.00	2.10	0.50	1.60	4.20
Buffalo & Cow	03	25.00	1.25	0.62	0.62	2.01

Spread effects on fellow farmers

After receiving training from the center and inspiration from Mr. Yadav, more than dozen farmers of the district have adopted 'Suhana Model' of integrated farming system and are earning Rs. 4.00-7.00 lakh gross income per annum.

Awards

Mr. Yadav has received district level appreciation award from ATMA, Kota, Millionaire Farmer Award by Krishi Jagran, New Delhi and appreciation certificate by KVK in Krishi Vigyan Mela 2022 for his excellent work in the field of integrated farming system.

IFS unit established under technical guidance of the center

Name	Address	Mobile No.	Annual Gross Income (₹ in lakh)
Mr. Satyanarayan Yadav	Suhana, Digod, Kota	9414179545	6.00-7.00
Mr. Parmanand	Suhana, Digod, Kota	9928476044	5.00-6.00
Mr. Suresh Meena	Raikhera, Kota	8290409774	5.00-6.00
Mr. Brijmohan Meena	Chomakot, Kota	9928259037	4.00-5.00

6. दुगुनी आय हेतु डेयरी फार्मिंग

नाम : श्री जिनेन्द्र चौधरी
पिता का नाम : श्री सुखपाल सिंह
पता : बालिता, कोटा (राज.)
मोबाईल न. : 9460981189

तकनीकी

डेयरी एक ऐसा व्यवसाय है, जो कि गाँव, कस्बों एवं शहरों में कम पूंजी के साथ शुरू किया जा सकता है। डेयरी व्यवसाय के लिए कच्चा माल (चारा–दाना), पशु (गाय–भैंस), पूँजी (बैंक ऋण), बाजार (गाँव में सहकारी समितियों के दूध संग्रहण केन्द्र) एवं श्रम (युवा स्वयं) स्थानीय स्तर पर ही उपलब्ध है। डेयरी व्यवसाय की सफलता के लिए पशुपालन प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए उन्नत नस्ल के पशु, संतुलित पशु आहार, पशुओं का अच्छा स्वास्थय, उचित पशु आवास आदि की व्यवस्था एवं प्रबंधन से पशुओं की प्रजनन एवं उत्पादन क्षमता के स्तर को ऊँचा रखकर लाभ कमाया जा सकता हैं।

10 गिर गायों की डेयरी इकाई का आर्थिक विश्लेषण

स्थापना खर्च (पशु, पशु शेड, उपकरण,आदि)	:	₹ 15.00 लाख
औसत दूध उत्पादन प्रतिवर्ष	:	20000 लीटर
दूध विक्रय दर	:	₹ 70.00 प्रति लीटर
वार्षिक सकल आय	:	₹ 14.00 लाख
वार्षिक सकल लागत	:	₹ 9.50 लाख
वार्षिक शुद्ध आय	:	₹ 4.50 लाख
लाभ लागत अनुपात	:	1.47

कृषि विज्ञान केन्द्र का योगदान

केन्द्र द्वारा युवाओं के लिए डेयरी फार्मिंग पर कौशल विकास प्रशिक्षण आयोजित किये जाते हैं, जिससे युवा डेयरी को उद्यम के रूप में अपना रहे हैं।

मूल गतिविधि

केन्द्र द्वारा वर्ष 2015 में प्रशिक्षित श्री जिनेन्द्र चौधरी, बालिता, कोटा ने 4 संकर गायों से डेयरी फार्मिंग की शुरूआत कर वर्तमान में श्री चौधरी 30 संकर गाय एवं 10 गिर गायों से प्रतिवर्ष 1.25 लाख लीटर दुग्ध उत्पादन कर कुल सकल आय 80.00 लाख रूपये एवं शुद्ध बचत 22.00 लाख रूपये प्रतिवर्ष है।

वर्ष 2023-24 में औसत दुग्ध उत्पादन, आय और लाभ लागत अनुपात (30 संकर एवं 10 गिर गाय)

दुध उत्पादन (लीटर)	सकल आय (₹ लाख में)	सकल लागत (₹ लाख में)	शुद्ध आय (₹ लाख में)	लाभ लागत अनुपात
1.25 लाख	80.00	58.00	22.00	1.37

अन्य किसानों पर सफलता का असर

केन्द्र से प्रशिक्षण प्राप्त कर एवं श्री चौधरी से प्रेरणा लेकर जिले के दर्जनों युवाओं ने डेयरी फार्मिंग को उद्यम के रूप में अपनाकर 8.00–30.00 लाख रूपये सकल आय प्रतिवर्ष अर्जित कर रहे है।

पुरस्कार

श्री चौधरी को डेयरी फार्मिंग के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए विश्वविद्यालय द्वारा प्रशंसा पत्र प्रदान किया गया।

केन्द्र के तकनीकी मार्गदर्शन में स्थापित डेयरी फार्मिंग इकाई

नाम	पता	मोबाईल नं.	वार्षिक सकल आय (₹ लाख में)
श्री धन्नजय सिंह यादव	रायपुरा,कोटा	9680654499	25.00–30.00
श्री रोहित सिंह	बोरखेडा, कोटा	9829037404	10.00–12.00
श्री रूपचन्द गुजंल	बंधा धरमपुरा, कोटा	9783271994	08.00–10.00

सकल आय 80.00 लाख रूपये एवं शुद्ध बचत 22.00 लाख रूपये प्रतिवर्ष है।

6. Dairy farming for Doubling Income

Name : Mr. Jinendra Choudhary
Father's Name : Mr. Sukhpal Singh
Address : Balita, Kota (Raj.)
Mobile No. : 9460981189

Technology

Dairy is a business which can be started with low capital in villages and towns. In dairy business, raw material (fodder and grains), animal (cow and buffalo), capital (bank loan), market (milk collection centers of cooperative societies in the village) and labor (youth themselves) are available at the local level. For the success of dairy business adopting animal husbandry technology, by managing advanced breed animals, balanced animal feed, good health of animals, proper animal housing etc., for keeping high level of reproductive and production capacity of animals resulting profit from dairy business.

Economics of Dairy Farming (10 Gir Cows)

Establishment cost (Animal, Animal shed, Equipment's etc.)	:	₹15.00 lakh
Average milk production per year	:	20000 ltr
Milk sale rate	:	₹ 70.00 / ltr
Annual gross income	:	₹ 14.00 lakh
Annual gross cost	:	₹ 9.50 lakh
Annual net income	:	₹ 4.50 lakh
Benefit cost ratio (BCR)	:	1.47

Role of KVK

Skill development training on dairy farming is organized by the centre for the youth, in which the youth are adopting dairy as an enterprise.

Core Activity

Mr. Jinendra Choudhary, Balita, Kota trained by the centre in 2015 and started dairy farming with 4 hybrid cows. Presently, Mr. Choudhary has 30 hybrid cows and 10 Gir cows which producing 1.25 lakh liter milk annually. He is earning gross income of Rs. 80.00 lakh and net profit of Rs 22.00 lakh per year.

Average milk production, income and cost-benefit ratio during 2023-24 (30 crossbred and 10 gir cows)

Milk Production (Ltr.)	Gross income (₹ in lakh)	Gross Cost (₹ in lakh)	Net Profit (₹ In lakh)	B:C ratio
1.25 Lakh	80.00	58.00	22.00	1.37

Spread effects on fellow farmers

After receiving training from the center and inspiration from Mr. Choudhary, more than dozen youth have adopted dairy farming as enterprise and earning Rs. 8.00-30.00 lakh gross income per year.

Awards

Mr. Choudhary had received appreciation certificate from University for excellent work in the field of dairy farming.

Dairy farming unit established under technical guidance of the center

Name	Address	Mobile No.	Annual Gross Income (₹ in lakh)
Mr. Dhannjay Singh Yadav	Raipura, Kota	9680654499	25.00- 30.00
Mr. Rohit Singh	Borkhera, Kota	9829037404	10.00-12.00
Mr. Roopchand Gunjal	Banda Dharampura, Kota	9783271994	8.00-10.00

7. अतिरिक्त आय हेतु बकरी पालन

नाम : श्री धनराज मीणा
पिता का नाम : श्री रामकल्याण मीणा
पता : नारायणपुरा, कोटा (राज.)
मोबाईल न. : 9929778903

तकनीकी

भारतीय कृषि आधारित अर्थव्यवस्था में बकरी की महत्वपूर्ण भूमिका हैं। बकरियों से दूध, मांस एवं खाद मिलता हैं। बकरी पालन प्रायः सभी जलवायु में कम लागत, साधारण आवास, सामान्य प्रबंधन तकनीक के साथ संभव हैं। अच्छी नस्ल की बकरी, अर्द्धगहन पालन प्रणाली, पूरक आहार, टीकाकरण एवं स्वास्थ्य प्रबंध करके ग्रामीण युवा बकरी पालन (10 बकरी + 1 बकरा) को उद्यम के रूप में अपनाकर प्रतिवर्ष 1.50 लाख रूपये की अतिरिक्त आय प्राप्त कर सकते हैं।

बकरी यूनिट (10 बकरी + 1 बकरा) का आर्थिक विश्लेषण

स्थापना खर्च (पशु, पशु शेड, उपकरण, आदि)	:	₹ 3.00–3.50 लाख
वर्षिक आय (बकरों, मैग्नी, दूध का विक्रय एवं बकरियों में बढ़ोतरी)	:	₹ 3.00–3.50 लाख
वार्षिक लागत	:	₹ 1.50–2.00 लाख
वार्षिक शुद्ध आय	:	₹ 1.50 लाख
लाभ लागत अनुपात	:	2.00

कृषि विज्ञान केन्द्र का योगदान

ग्रामीण युवाओं को स्वरोजगार से जोडने हेतु बकरी पालन पर राष्ट्रीय कृषि विकास योजना – बकरी प्रोजेक्ट के तहत कृषि विज्ञान केन्द्र, कोटा, बून्दी, हिण्डौन में वर्ष 2019 से कौशल विकास प्रशिक्षण आयोजित कर बकरी पालन में उद्यमिता विकास किया जा रहा है।

मूल गतिविधि

केन्द्र द्वारा वर्ष 2021 में प्रशिक्षित श्री धनराज मीणा, नारायणपुरा, कोटा बकरी पालन से 3.00–4.00 लाख रूपये की अतिरिक्त आय प्राप्त कर रहें है।

अन्य किसानों पर सफलता का असर

कृषि विज्ञान केन्द्रो से प्रशिक्षण प्राप्त कर कोटा, बून्दी, हिण्डौन आदि के दर्जनों युवाओं ने बकरी पालन को उद्यम के रूप में अपनाकर 3.00–4.00 लाख रूपये अतिरिक्त आय अर्जित कर रहे है।

युवा बकरी पालन को व्यवसाय के रूप में अपनाएं

नवज्योति/कोटा

कृषि विज्ञान केन्द्र में बकरी पालन पर चार दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें संभाग के 35 पशुपालकों ने भाग लिया। प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर कृषि विज्ञान केन्द्र, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, डॉ. महेन्द्र सिंह ने बताया कि संभाग के युवा बकरी पालन को व्यवसाय के रूप में अपनाकर उद्यमी बन सकते हैं। बकरी पालन व्यवसाय, कम लागत एवं कम स्थान के साथ शुरू किया जा सकता है तथा इसमें जोखिम भी बहुत कम है। प्रशिक्षण शिविर के प्रभारी प्रोफेसर रामआसरे ने बताया कि सिरोही नस्ल की बकरी से उच्च गुणवत्ता का मांस एवं दूध मिलता है। कृषि विज्ञान केन्द्र, बून्दी के पशुपालन विशेषज्ञ, डॉ. घनश्याम मीणा ने बकरियों के आहार तथा बकरियों में खुर काटना, टैग लगाना, शरीर तापमान ज्ञात करना आदि की जानकारी पशुपालकों को दी। कार्यक्रम में एग्री. क्लीनिक एवं एग्री. बिजनिस सेन्टर उदयपुर के डॉ. मुकेश सुथार ने बताया कि नेशनल लाइवस्टोक मिशन के अन्तर्गत पशुपालक 100 बकरियों की यूनिट पर 10 लाख रुपए की केपिटल सब्सिडी ले सकते हैं। उन्होंने पशुपालकों को इसकी विस्तृत जानकारी भी प्रदान की। नाबार्ड के डीडीएम रामप्रसाद शर्मा ने बताया कि बकरी पालन को बढ़ावा देने के लिए बैंकों द्वारा ऋण को प्राथमिकता दी जाएगी। केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सत्यवीर सिंह ने बताया कि बकरी पालक हैल्थ कलेण्डर को अपनाकर बकरियों में मृत्युदर को 5 प्रतिशत से कम कर सकते है। पशुपालन विभाग के वरिष्ठ पशुचिकित्सक, डॉ. भंवरलाल ने बकरियों में टीकाकरण एवं कृमिनाशक दवा पिलाने की जानकारी दी। शिविर में बकरियों की नस्ल एवं आवास, बकरी के दूध प्रसंस्करण, हराचारा उत्पादन, बकरी फार्म स्थापना के समय ध्यान रखने योग्य मुख्य बातों की भी जानकारी दी गई।

केन्द्र के तकनीकी मार्गदर्शन में स्थापित बकरी पालन इकाई

नाम	पता	मोबाईल नं.	वार्षिक सकल आय (₹ लाख में)
श्री अशोक सेन	धर्मपुरा, कोटा	9928279803	3.00–4.00
श्री प्रमोद गुर्जर	किशनपुरा, बून्दी	9571394697	3.00–4.00
श्री राजू लाल मीणा	कारबन, हिण्डौन, करौली	6377338825	3.00–4.00
श्री हुकम सिंह गुर्जर	रोण्डकला, करौली	8239071411	3.00–4.00

7. Goat Rearing for Additional Income

Name : Mr. Dhanraj Meena
Father's Name : Mr. Ramkalyan Meena
Address : Narayanpura, Kota (Raj.)
Mobile No. : 6377338825

Technology

Goat plays an important role in the Indian agriculture based economy. Goat provides milk, meat and manure. Goat rearing is possible in almost all climates with low cost, simple housing, normal management technique. By rearing good breed of goats, semi-intensive rearing system, supplementary feed, vaccination and health management, rural youth can adopt goat rearing (10 goats + 1 male goat) as an enterprise and earn an additional income of Rs 1.50 lakh per year.

Economics of goat unit (10 goats + 1 male goat)

Establishment cost (animal, animal shed, equipment, etc.)	: ₹ 3.00-3.50 lakh
Annual income (sale of goats, manure, milk and increase in number of goat)	: ₹ 3.00-3.50 lakh
Annual expenditure	: ₹ 1.50-2.00 lakh
Annual net income	: ₹ 1.50 lakh
Benefit cost ratio (BCR)	: 2.00

Role of KVK

Krishi Vigyan Kendra, Kota, Bundi and Hindaun organize skill development training on goat rearing under RKVY goat project since 2019 to develop entrepreneurship of rural youth and connect them with self employment.

Core Activity

Mr. Dhanraj Meena, Narayanpura, Kota, trained by the centre in 2021 is earning additional income of Rs. 3.00-4.00 lakh from goat rearing.

Spread effects on fellow farmers

After receiving training from KVKs, dozens of youth from Kota, Bundi, Hindaun are earning additional income of Rs. 3.00-4.00 lakh by adopting goat rearing as an enterprise.

युवा बकरी पालन को व्यवसाय के रूप में अपनाएं

नवज्योति/कोटा

कृषि विज्ञान केन्द्र में बकरी पालन पर चार दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें संभाग के 35 पशुपालकों ने भाग लिया। प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर कृषि विज्ञान केन्द्र, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, डॉ. महेन्द्र सिंह ने बताया कि संभाग के युवा बकरी पालन को व्यवसाय के रूप में अपनाकर उद्यमी बन सकते हैं। बकरी पालन व्यवसाय, कम लागत एवं कम स्थान के साथ शुरू किया जा सकता है तथा इसमें जोखिम भी बहुत कम है। प्रशिक्षण शिविर के प्रभारी प्रोफेसर रामआसरे ने बताया कि सिरोही नस्ल की बकरी से उच्च गुणवत्ता का मांस एवं दूध मिलता है। कृषि विज्ञान केन्द्र, बून्दी के पशुपालन विशेषज्ञ, डॉ. घनश्याम मीणा ने बकरियों के आहार तथा बकरियों में खुर काटना, टैग लगाना, शरीर तापमान ज्ञात करना आदि की जानकारी पशुपालकों को दी। कार्यक्रम में एग्री. क्लीनिक एवं एग्री. बिजनिस सेन्टर उदयपुर के डॉ. मुकेश सुथार ने बताया कि नेशनल लाइवस्टोक मिशन के अन्तर्गत पशुपालक 100 बकरियों की यूनिट पर 10 लाख रुपए की केपिटल सब्सिडी ले सकते हैं। उन्होंने पशुपालकों को इसकी विस्तृत जानकारी भी प्रदान की। नाबार्ड के डीडीएम रामप्रसाद शर्मा ने बताया कि बकरी पालन को बढ़ावा देने के लिए बैंकों द्वारा ऋण को प्राथमिकता दी जाएगी। केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सत्यवीर सिंह ने बताया कि बकरी पालक हैल्थ कलेण्डर को अपनाकर बकरियों में मृत्युदर को 5 प्रतिशत से कम कर सकते हैं। पशुपालन विभाग के वरिष्ठ पशुचिकित्सक, डॉ. भंवरलाल ने बकरियों में टीकाकरण एवं कृमिनाशक दवा पिलाने की जानकारी दी। शिविर में बकरियों की नस्ल एवं आवास, बकरी के दूध प्रसंस्करण, हराचारा उत्पादन ,बकरी फार्म स्थापना के समय ध्यान रखने योग्य मुख्य बातों की भी जानकारी दी गई।

Goat rearing unit established under technical guidance of the center

Name	Address	Mobile No.	Annual Gross Income (₹ in lakh)
Mr. Ashok Sen	Dharmpura, Kota	9928279803	3.00-4.00
Mr. Pramod Gurjar	Kishanpura, Bundi	9571394697	3.00-4.00
Mr. Raju Lal Meena	Karban, Hindaun	6377338825	3.00-4.00
Mr. Hukum Gurjar	Rondkala, Karauli	8239071411	3.00-4.00

8. जैविक खेती: कम लागत–अधिक आय

नाम : श्री विष्णु प्रकाश नागर
पिता का नाम : श्री बलराम नागर
पता : जोरावरपुरा, कोटा (राज.)
मोबाईल न. : 9772315111

तकनीकी

जैविक खेती कृषि की एक उत्पादन प्रबंधन प्रणाली है जिसमे बाहरी सिंथेटिक आदानों को छोडकर केवल जैविक प्रणाली एवं यांत्रिक तरीको जैसे फसल चक्र, जैविक अपशिष्ट, फसल अवशेष, पशु खाद, खनिज ग्रेड रॉक फोस्फेट आदि पर निर्भर करती हैं। यह प्रणाली पौषक तत्व सुरक्षा, जैव विविधता, फसल संरक्षण, जैविक चक्र और कृषि–पारिस्थितिकी तंत्र स्वास्थ्य को बढ़ावा देती है।

कृषि विज्ञान केन्द्र का योगदान

श्री नागर 2019 से केन्द्र द्वारा आयोजित प्रशिक्षणों, प्रदर्शनों एवं अन्य प्रसार गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी में रहें। इन्होने पीकेवीवाई परियोजना के अन्तर्गत वर्ष 2020 में आयोजित कृषक प्रशिक्षण में भाग लिया तथा 2021 में केन्द्र द्वारा वित्तीय सहयोग से वर्मीकम्पोस्ट इकाई की स्थापना कर जैविक खेती की शुरूआत की।

मूल गतिविधियाँ

श्री नागर के पास कुल 5.00 हैक्टेयर जमीन हैं जिसमें परम्परागत विधि द्वारा सोयाबीन–गेंहू फसल प्रणाली की खेती से ज्यादा मुनाफा नहीं मिल पाता था। वर्ष 2021 में इन्होने 2.00 हैक्टेयर जमीन में परम्परागत खेती की जगह जैविक खेती को अपनाया। इन्होने अपने खेत में 2.00 लाख रूपये की लागत से 25X3 फीट की 25 वर्मीकम्पोस्ट बेड की स्थापना की। वर्तमान में श्री नागर गेंहू, चना, धनियाँ के जैविक उत्पादन तथा वर्मीकम्पोस्ट से 7.82 लाख रूपये औसत सकल आय प्रतिवर्ष अर्जित कर रहें हैं। श्री नागर को राजस्थान राज्य बीज एवं जैविक प्रमाणिकरण संस्था, राजस्थान सरकार द्वारा जैविक खेती का पंजीकरण प्रमाण पत्र प्राप्त हैं।

वर्ष 2023-24 में औसत उत्पादन, आय और लाभ लागत अनुपात

फसल/ गतिविधि	इकाई (है.)	उत्पादन (क्विं.)	सकल आय (₹ लाख में)	सकल लागत (₹ लाख में)	शुद्ध आय (₹ लाख में)	लाभ लागत अनुपात
जैविक गेंहू	1.0	34.0	1.36	0.45	0.91	3.02
जैविक चना	0.5	9.50	0.66	0.17	0.49	3.88
जैविक धनियाँ	0.5	8.00	0.80	0.16	0.64	5.00
वर्मीकम्पोस्ट	25	500.0	5.00	2.00	3.00	2.50

अन्य किसानों पर सफलता का असर

केन्द्र से प्रशिक्षण प्राप्त कर एवं श्री नागर द्वारा प्रेरणा लेकर जिले के 30 से अधिक युवाओं, किसानों ने गेंहू, धनियाँ, लहसुन आदि फसलों की जैविक खेती कर 2.00–4.00 लाख रूपये सकल आय प्रतिवर्ष अर्जित कर रहे हैं।

पुरस्कार

श्री नागर को जैविक खेती के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु आत्मा, कोटा द्वारा ब्लॉक स्तरीय कृषक प्रशस्ति पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

केन्द्र के तकनीक मार्गदर्शन में स्थापित जैविक खेती इकाई

नाम	पता	मोबाईल नं.	वार्षिक सकल आय (₹ लाख में)
श्री हनुमन्त सिंह	ताथेड़, कोटा	9829492982	3.00–4.00
श्री राजेन्द्र कुमार	बालीता, कोटा	9928374612	3.00–4.00
श्री सुशील कुमार यादव	मानसगांव, कोटा	7793835850	2.00–3.00
श्री तेज सिंह	सोगरिया, कोटा	7014577703	2.00–3.00
श्री नवदीप सिंह	किशनपुरा तकिया, कोटा	9799604007	2.00–3.00

8. Organic Farming: Low Cost - High Profit

Name : Mr. Vishnu Prakash Nagar
Father's Name : Mr. Balram Nagar
Address : Jorawarpura, Kota (Raj.)
Mobile No. : 9772315111

Technology

Organic farming is a production management system excluding of all synthetic off-farm inputs but rely upon on-farm agronomic, biological and mechanical methods like crop rotations, crop residues, animal manures, off-farm organic waste, mineral grade rock additives and biological system of nutrient mobilization and plant protection, etc., which promotes and enhances biodiversity, biological cycles and agro-ecosystem health

Role of KVK

Mr. Nagar is regularly in touch with KVK from the year of 2019 and actively participating in trainings, demonstrations and other extension activities of the centre. He has participated in organic farming training conducted under PKVY project in 2020 and also established vermicompost unit by taking financial assistance from KVK, Kota under PKVY Project in 2021 and started organic farming.

Core Activity

Mr. Nagar having 5.0 ha land with conventional farming of soybean-wheat cropping system but not getting enough return. In 2021 Mr. Nagar converted 2.0 ha area from conventional to organic farming. He has established 25 vermicompost beds size of 25 x 3 ft. with cost of Rs. 2.00 lakh for the construction of vermicompost beds etc. Presently, Mr. Nagar is earning 7.82 lakh average gross income annually by production of organic wheat, chickpea, coriander and vermicompost etc. Mr. Nagar also got registration certificate from Rajasthan State Seed and Organic Certification Agency, Govt. of Rajasthan.

Average production, income and cost-benefit ratio during 2023-24

Crop/ activities	Unit (ha)/No	Production on (q)	Gross income (₹ in lakh)	Gross Cost (₹ in lakh)	Net Profit (₹ In lakh)	B:C ratio
Organic Wheat	1.0	34.0	1.36	0.45	0.91	3.02
Organic Chickpea	0.5	9.50	0.66	0.17	0.49	3.88
Organic Coriander	0.5	8.00	0.80	0.16	0.64	5.00
Vermicompost	25	500.0	5.00	2.00	3.00	2.50

Spread effects on fellow farmers

After receiving training from the center and inspiration from Mr. Nagar, more than 30 youth/farmers of the of district have adopted organic cultivation of wheat, garlic, coriander etc. crops and are earning average gross income of Rs. 2.00-4.00 lakh per year.

Awards

Mr. Nagar has received block level appreciation certificate from ATMA, Kota for his excellent work in the field of organic farming.

Organic farming unit established under technical guidance of the center

Name	Address	Mobile No.	Annual Gross Income (₹ in lakh)
Mr. Hanumant Singh	Tathed, Kota	9829492982	3.00-4.00
Mr. Rajendra Kumar	Balitha, Kota	9928374612	3.00-4.00
Mr. Sushil Kumar Yadav	Manasgav, Kota	7793835850	2.00-3.00
Mr. Tej Singh	Sogriya, Kota	7014577703	2.00-3.00
Mr. Navdeep Singh	Kishanpur Takiya, Kota	9799604007	2.00-3.00

9. बागवानी : किसान समृद्धि की कहानी

नाम : श्री मनोज खण्डेलवाल
पिता का नाम : श्री घनश्याम लाल गुप्ता
पता : पीपल्दा, कोटा (राज.)
मोबाईल न. : 9414183637

तकनीकी

किसान परम्परागत खेती की जगह नवाचारी तकनीकियों को अपनाकर अधिक आय अर्जित कर रहा हैं। किसान 1.25 लाख रुपये की लागत से एक हैक्टेयर में ड्रिप सिंचाई के साथ अमरूद का बगीचे की स्थापना कर सकते हैं। रोपण के तीसरे वर्ष के बाद बगीचे से 500–700 क्विंटल अमरूद प्रति हेक्टेयर पैदावार होती है, जिससे किसान 6.00–8.00 लाख रुपये की वार्षिक औसत सकल आय प्राप्त कर सकता है।

कृषि विज्ञान केन्द्र का योगदान

केन्द्र द्वारा जिले में बागवानी को बढ़ावा देने हेतु कौशल विकास प्रशिक्षण आयोजित किये जाते है। वर्ष 2018 में श्री मनोज खण्डेलवाल ने केन्द्र द्वारा आयोजित बागवानी विषय पर प्रशिक्षण में भाग लिया।

मूल गतिविधि

श्री खण्डेलवाल पूर्व में कृषि जिंस का व्यापार करते थे, घर की जमीन में परम्परागत खेती से अधिक मुनाफा नही मिलने के कारण खेत को बटाई काश्त पर दिया करते थे। वर्ष 2018 में केन्द्र से प्रशिक्षण के उपरांत श्री खण्डेलवाल ने परम्परागत खेती की जगह बागवानी को अपनाकर अपने खेत में केन्द्र के तकनीकी मार्गदर्शन से 5.00 है. अमरूद (किस्म–वीएनआर–वीही, थाईपिंक, बर्फखानगोला) का बगीचा स्थापित किया। जिससे प्रतिवर्ष 22.00 लाख रूपये की सकल आय अर्जित कर रहे है। वर्तमान में श्री खण्डेलवाल द्वारा और 4.00 है. में नया अमरूद का बगीचा सघन रोपण प्रणाली में स्थापित किया है।

वर्ष 2023-24 में औसत अमरूद उत्पादन, आय और लाभ लागत अनुपात

इकाई (है.)	उत्पादन (क्विं.)	सकल आय (₹ लाख में)	सकल लागत (₹ लाख में)	शुद्ध आय (₹ लाख में)	लाभ लागत अनुपात
5.00	1100.00	22.00	7.00	15.00	3.14

अन्य किसानों पर सफलता का असर

केन्द्र से प्रशिक्षण प्राप्त कर एवं श्री खण्डेलवाल द्वारा प्रेरणा लेकर जिले के दर्जनों ग्रामीण युवाओं ने बागवानी को रोजगार के रूप में अपनाकर 4.00–9.00 लाख रूपये प्रति वर्ष कमा रहे है।

पुरस्कार

श्री खण्डेलवाल को उद्यानिकी के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु भारतीय जैविक किसान उत्पादक संघ एवं कृषि विज्ञान केन्द्र कोटा द्वारा कृषक प्रशस्ति पत्र, कृषि जागरण, नई दिल्ली द्वारा मिलेनियर फामर्स अवार्ड एवं अन्य पुरस्कार प्राप्त हुए है।

किसान की आय दोगुनी करने का बेहतर विकल्प है बागवानी

बागवानी ने बदली किस्मत, युवाओं को दे रहे रोजगार

पत्रिका एग्रो प्राइड

हाकूलाल शर्मा

बागवानी के लिए छोड़ी नौकरी

10 हजार से ज्यादा पौधे

बागवानी से आय दोगुनी

केन्द्र के तकनीकी मार्गदर्शन में स्थापित मुख्य बागवानी इकाई

नाम	पता	मोबाईल नं.	वार्षिक सकल आय (₹ लाख में)
श्री गिर्राज प्रसाद मीणा	बूढ़ादीत, कोटा	9680840702	8.00–9.00
श्री प्रहलाद मीणा	राईखेड़ा, कोटा	8107952451	7.00–8.00
श्री भवानी शंकर माली	सुल्तानपुर, कोटा	9950536418	5.00–6.00
श्री प्रदीप मीणा	ढाकिया, रामगंजमण्डी, कोटा	7878800108	4.00–5.00

9. Horticulture: Story of Farmer Prosperity

Name : Mr. Manoj Khandelwal
Father's Name : Mr. Ghanshyam Lal Gupta
Address : Pipalda, Kota (Raj.)
Mobile No. : 9414183637

Technology

Farmers can establish one hectare guava orchard with drip irrigation with an initial investment of Rs 1.25 lakh. By the third year, the orchard yields 500-700 q of guava per hectare, providing the farmer with an annual average gross income between Rs 6.00 to 8.00 lakh.

Role of KVK

Skill development trainings are organized by Krishi Vigyan Kendra to promote horticulture in the district. In the year 2018, Mr. Manoj Khandelwal participated in the training on horticulture organized by the centre and he applied the gained knowledge in his horticultural endeavors.

Core Activity

Mr. Khandelwal used to trade in agricultural commodities in the past and he was not getting much profit from traditional farming on his home land, he used to give the farm on shareholding. After receiving training from KVK in the year 2018, Mr. Khandelwal adopted horticulture instead of traditional farming in his farm with the technical guidance of the KVK. He established guava orchard (varieties – VNR-Veehi, Thai pink, Barfkhan gola) and earning 22.00 lakh gross income per annum. In 2023, he has been established 4.0 ha new guava orchard in dense planting system.

Average production, income and cost-benefit ratio of guava orchard during 2023-24

Unit (ha)	Production (q)	Gross income (₹ in lakh)	Gross Cost (₹ in lakh)	Net Profit (₹ In lakh)	B:C ratio
5.00	1100.00	22.00	7.00	15.00	3.14

Spread effects on fellow farmers

After receiving training from the center and inspiration from Mr. Khandelwal, more than dozen rural youth of the district have adopted horticulture as an employment and are earning Rs 4.00-9.00 lakh gross income per year.

Awards

Mr. Khandelwal has received appreciation certificates from the Indian Organic Farmers Producer Society & KVK, Kota and millionaire farmer award by Krishi Jagran, New Delhi for his excellent work in the field of horticulture.

किसान की आय दोगुनी करने का बेहतर विकल्प है बागवानी

बागवानी ने बदली किस्मत, युवाओं को दे रहे रोजगार

पत्रिका एग्रो प्राइड

10 हजार से ज्यादा पौधे

बागवानी के लिए छोड़ी नौकरी

बागवानी से आय दोगुनी

Horticulture unit established under technical guidance of the center

Name	Address	Mobile No.	Annual Gross Income (₹ in lakh)
Mr. Giriraj Prasad Meena	Budhadeet, Kota	9680840702	8.00-9.00
Mr. Prahlad Meena	Raikhera, Kota	8107952451	7.00-8.00
Mr. Bhawani Shankar Mali	Sulthanpur, Kota	9950536418	5.00-6.00
Mr. Pardeep Meena	Dhakiya, Kota	7878800108	4.00-5.00

10. संरक्षित खेती : आय सर्जन का अच्छा विकल्प

नाम : श्री मुकेश मीणा
पिता का नाम : श्री मोडूलाल मीणा
पता : उमरहेड़ी, कोटा (राज.)
मोबाईल न. : 9950640762

तकनीकी

किसान संरक्षित खेती करके बेमौसमी सब्जी उत्पादन से अधिक आय अर्जित कर सकते है। पॉलीहाउस (4000 वर्ग मीटर) में वर्ष में खीरे की तीन फसल से औसतन 100–120 टन उत्पादन होता है, जिससे 15.00–17.00 लाख रूपये सकल आय अर्जित की जा सकती हैं।

कृषि विज्ञान केन्द्र का योगदान

केन्द्र द्वारा जिले में संरक्षित खेती को बढ़ावा देने के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जाते है, इन प्रशिक्षणों में प्रायोगिक ज्ञान अर्जित करने के बाद जिले के किसान/ग्रामीण युवा संरक्षित खेती को अपनाकर अपनी आय बढ़ा रहें हैं।

मूल गतिविधि

श्री मुकेश मीणा पूर्व में परम्परागत तरीके से खेती करते थे जिससे प्रति एकड़ 1–1.50 लाख रूपये का मुनाफा होता था। इन्होने वर्ष 2020 में केन्द्र द्वारा आयोजित संरक्षित बागवानी प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया तथा इसके उपरान्त अपने खेत में 4000 वर्ग मीटर में पॉलीहाउस इकाई की स्थापना की तथा केन्द्र के तकनीकी मार्गदर्शन में खीरा फसल की खेती कर प्रतिवर्ष औसत 16.50 लाख रूपये सकल आय अर्जित कर रहे हैं।

वर्ष 2023-24 में औसत खीरा उत्पादन, आय और लाभ लागत अनुपात (पॉलीहाउस 4000 वर्ग मीटर)

उत्पादन (क्विं.)	सकल आय (₹ लाख में)	सकल लागत (₹ लाख में)	शुद्ध आय (₹ लाख में)	लाभ लागत अनुपात
1150.00	16.50	7.50	9.00	2.20

अन्य किसानों पर सफलता का असर

केन्द्र से प्रशिक्षण प्राप्त कर एवं श्री मुकेश मीणा की सफलता को देखकर जिले के दर्जनों किसान संरक्षित खेती को अपनाकर प्रतिवर्ष 7.00–16.00 लाख रूपये सकल आय अर्जित कर रहे हैं।

पुरस्कार

श्री मुकेश मीणा को संरक्षित खेती के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु आत्मा, कोटा द्वारा जिला स्तरीय कृषक प्रशस्ति पत्र पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

केन्द्र के तकनीकी मार्गदर्शन में स्थापित संरक्षित खेती इकाई

नाम	पता	मोबाईल नं.	पॉलीहाउस क्षेत्रफल (वर्ग मीटर)	वार्षिक सकल आय (₹ लाख में)
श्री कमलेश लोधा	जगपुरा, कोटा	9057273400	4000	15.00–16.00
श्री प्रतीक मीणा	हेमलखेड़ी, खैराबाद	7417474944	4000	15.00–16.00
श्री धर्मराज	सोहनपुरा, कोटा	9784308922	3000	08.00–10.00
श्री रामस्वरूप मेहता	लक्ष्मीपुरा, सांगोद	8290552358	2000	07.00–08.00
श्री आरीफ अहमद	लक्ष्मीपुरा, सांगोद	9166652232	2000	07.00–08.00

10. Protected Cultivation: Good Option for Income Generation

Name : Mr. Mukesh Meena
Father's Name : Mr. Modu Lal Meena
Address : Umarheri, Kota (Raj.)
Mobile No. : 9950640762

Technology

Farmers can earn more income from off-season vegetable production by doing protected cultivation. In a polyhouse of 4000 sqm an average of 100-120 tonnes of cucumber is produced from three crops in a year, from which an average gross income of Rs 15.00-17.00 lakh can be earned.

Role of KVK

The center organizes vocational training programs to promote protected farming in the district. After getting the practical knowledge form the training programmes farmers/ rural youth of the district are increasing their income by adopting protected cultivation.

Core Activity

Mr. Mukesh Meena used to do traditional farming in the past in which he used to get a profit of Rs. 1.00-1.50 lakh per acre. He participated in protected cultivation training programme in 2020 conducted by the centre after that he established a polyhouse unit of 4000 sqm in his farm. He is cultivating cucumber crop with the technical guidance of the centre and earning an average gross income of Rs. 16.50 lakh per year.

Average production, income and cost-benefit ratio of cucumber during 2023-24 (Polyhouse 4000 sqm)

Production (q)	Gross income (₹ in lakh)	Gross Cost (₹ in lakh)	Net Profit (₹ In lakh)	B:C ratio
1150.00	16.50	7.50	9.00	2.20

Spread effects on fellow farmers

After receiving training from the center and seeing the success of Mr. Mukesh Meena, more than dozen farmers of the district have adopted protection cultivation and are earning an average gross income of Rs 7.00-16.00 lakh per year.

Awards

Mr. Mukesh Meena has received district level appreciation certificate from ATMA, Kota for his excellent work in the field of protected cultivation.

Protected cultivation unit established under technical guidance of the center

Name	Address	Mobile No.	Polyhouse Area (sqm)	Annual Gross Income (₹ in lakh)
Mr. Kamlesh Lodha	Jagpura, Kota	9057273400	4000 sqm	15.00-16.00
Mr. Pratik Meena	Hemalkheri, Kherabad	7417474944	4000 sqm	15.00-16.00
Mr. Dharmraj	Sohanpura, Kota	9784308922	3000 sqm	08.00-10.00
Mr. Ramswroop Mehta	Laxmipura, Sangod	8290552358	2000 sqm	07.00-08.00
Mr. Sharif Amahed	Laxmipura, Sangod	9166652232	2000 sqm	07.00-08.00

11. सब्जी उत्पादन से किसान बनें मालामाल

नाम : श्री सतीश पंवार
पिता का नाम : श्री प्रभुलाल पंवार
पता : अर्जुनपुरा, कोटा (राज.)
मोबाईल न. : 7828303623

तकनीकी

किसान 1.00 लाख रूपये की लागत लगाकर, ड्रीप सिंचाई एवं मल्चिंग का उपयोग कर सब्जियों की खेती कर सकते हैं। सब्जियों के लगाने के 60–70 दिन बाद से ही आमदनी प्राप्त होने लग जाती हैं। किसान उन्नत तकनीकी से सब्जियों की खेती करके प्रति हैक्टयर 4.00–5.00 लाख रूपये की सकल आय प्राप्त कर सकते हैं।

कृषि विज्ञान केन्द्र का योगदान

केन्द्र द्वारा जिले में सब्जी उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता हैं। जिससे जिले के ग्रामीण युवा, किसान सब्जियों की खेती कर अच्छा मुनाफा कमा रहे हैं।

मूल गतिविधि

श्री सतीश पंवार, इंजिनियरिंग की पढ़ाई करने के बाद निजी सेक्टर में नौकरी करते थे। घरेलू जमीन में परम्परागत खेती से अधिक लाभांस नहीं मिलने के कारण इन्होने नौकरी छोडकर आधुनिक तकनीक से सब्जियों की खेती करना प्रारम्भ किया। यह कृषि की आधुनिक तकनीकियों, ड्रिप सिंचाई, समन्वित रोग कीट प्रबंधन आदि को अपनाकर 2.5 हैक्टेयर खेत से 9.80 लाख रूपये की सकल आय प्रतिवर्ष अर्जित कर रहें हैं।

वर्ष 2023-24 में औसत उत्पादन, आय और लाभ लागत अनुपात

फसल	इकाई (है.)	उत्पादन (क्विं.)	सकल आय (₹ लाख में)	सकल लागत (₹ लाख में)	शुद्ध आय (₹ लाख में)	लाभ लागत अनुपात
आलू	2.00	650.00	5.20	1.10	4.10	4.72
टमाटर	0.20	50.00	0.50	0.27	0.23	1.85
बैंगन	0.40	55.00	1.20	0.45	0.75	2.66
खरबूजा	0.80	84.00	2.10	0.80	1.30	2.62
ककड़ी	0.20	30.00	0.55	0.22	0.33	2.50
लौकी	0.20	37.00	0.25	0.10	0.15	2.50

अन्य किसानों पर सफलता का असर

केन्द्र से प्रशिक्षण प्राप्त कर 100 से अधिक किसानो/युवाओं ने सब्जी उत्पादन को उद्यम के रूप में अपनाकर औसत 2.00–8.00 लाख रूपये सकल आय प्रतिवर्ष अर्जित कर रहें हैं।

पुरस्कार

श्री सतीश जिले में दूसरे किसानों के लिए सब्जी उत्पादन के क्षेत्र में प्रेरणास्त्रोत के रूप में कार्य कर रहे है एवं इनकी सफलता की कहानी नवाचारी किसान के रूप में कृषि पत्रिका में प्रकाशित हुई हैं।

केन्द्र के तकनीकी मार्गदर्शन में स्थापित सब्जी उत्पादन इकाई

नाम	पता	मोबाईल नं.	वार्षिक सकल आय (₹ लाख में)
श्री जयप्रकाश गहलोत	अर्जुनपुरा, कोटा	9530013508	6.00–8.00
श्री रामगोपाल धाकड़	सोहनखेड़ा, कोटा	9784274860	3.00–4.00
श्री भंवरलाल सुमन	चौमा बीबू, कोटा	9602104423	3.00–4.00
श्री नरेश सोलंकी	अर्जुनपुरा, कोटा	9680038756	2.00–3.00
श्री शुभम सैनी	अर्जुनपुरा, कोटा	9784447816	2.00–3.00

11. Farmers Become Rich from Vegetable Production

Name : Mr. Satish Panwar
Father's Name : Mr. Prabhulal Panwar
Address : Arjunpura, Kota (Raj.)
Mobile No. : 7828303623

Technology

Farmers can cultivate vegetables with drip irrigation and mulching with an initial cost of Rs 1.00 lakh. The income from vegetables starts 60-70 days after sowing. By adoption of vegetable cultivation technology, farmers get an annual average gross income of Rs. 5.0 to 6.0 lakh.

Role of KVK

The training programmes are organized to promote vegetable production in the district due to which the rural youth and farmers of the district are earning good profits by vegetable production.

Core Activity

Mr. Satish Panwar did engineering and after that worked in the private sector. He left his job and started vegetable cultivation with modern technology because his family was not getting much profit from traditional farming. By adopting modern agricultural techniques like drip irrigation, integrated disease and pest management etc., he is earning an average gross income of Rs. 9.80 lakh per year from 2.5 ha.

Average production, income and cost-benefit ratio during 2023-24

Crop	Unit (ha)	Production on (q)	Gross income (₹ in lakh)	Gross Cost (₹ in lakh)	Net Profit (₹ In lakh)	B:C ratio
Potato	2.00	650.00	5.20	1.10	4.10	4.72
Tomato	0.20	50.00	0.50	0.27	0.23	1.85
Brinjal	0.40	55.00	1.20	0.45	0.75	2.66
Muskmelon	0.80	84.00	2.10	0.80	1.30	2.62
Long melon	0.20	30.00	0.55	0.22	0.33	2.50
Bottle gourd	0.20	37.00	0.25	0.10	0.15	2.50

Spread effects on fellow farmers

After receiving training from the center, more than 100 farmers/rural youth of the district have adopted vegetable production as an enterprise and are earning Rs 2.00-8.00 lakh gross income per year.

Awards

Mr. Satish is acting as a source of inspiration for other farmers in the field of vegetable cultivation in the district and his success story was published as innovative farmer in agriculture magazine.

Vegetable production unit established under technical guidance of the center

Name	Address	Mobile No.	Annual Gross Income (₹ in lakh)
Mr. Jaiprakash Gahlot	Arjunpura, Kota	9530013508	6.00-8.00
Mr. Ramgopal Dhakar	Sohankhera, Kota	9784274860	3.00-4.00
Mr. Bhanwar Lal Suman	Choma Biboo, Kota	9602104423	3.00-4.00
Mr. Naresh Solanki	Arjunpura, Kota	9680038756	2.00-3.00
Mr. Shubham Saini	Arjunpura, Kota	9784447816	2.00-3.00

12. वर्मीकम्पोस्टिंग : अपशिष्ट से आय

नाम : श्री उमेश नागर
पिता का नाम : श्री बृजमोहन नागर
पता : पड़ासलिया, दिगोद, कोटा (राज.)
मोबाईल न. : 9649700260

तकनीकी

वर्मीकम्पोस्टिंग एक लोकप्रिय ठोस अपशिष्ट प्रबंधन तकनीक है। यह एक सरल खाद बनाने की विधि है जिसमें अपशिष्ट से वर्मीकम्पोस्ट खाद बनाने के लिए कुछ केंचुओं की प्रजातियों का प्रयोग किया जाता है। वर्मीकम्पोस्ट में नाइट्रेट, घुलनशील फास्फोरस, पोटेशियम, कैल्शियम, मैग्नीशियम और अन्य सूक्ष्म पोषक तत्व जैसे जिंक, कॉपर, फेरस, मैंगनीज आदि पौधों के लिए आसानी से उपलब्ध होते हैं।

वर्मीकम्पोस्ट इकाई आर्थिक विश्लेषण (3000 वर्गफुट)

स्थापना खच	:	₹ 3.50 लाख
प्रतिवर्ष वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन	:	500 क्विं.
वर्मीकम्पोस्ट विक्रय दर	:	₹10.00 प्रति कि.ग्रा.
वार्षिक आय	:	₹ 5.00 लाख
वार्षिक लागत	:	₹ 3.00 लाख
वार्षिक शुद्ध आय	:	₹ 2.00 लाख
लाभ लागत अनुपात	:	1.66

कृषि विज्ञान केन्द्र का योगदान

केन्द्र द्वारा जिले में युवाओं एवं किसानों के लिए वर्मीकम्पोस्ट विषय पर प्रशिक्षण आयोजित किये जाते है, जिससे जिले के युवा वर्मीकम्पोस्ट को स्टार्टअप के रूप में अपना रहे है।

मूल गतिविधि

श्री उमेश नागर ने इजिनियरिंग की पढ़ाई करने के बाद कृषि में स्टार्टअप के बारे में सोचा। केन्द्र में आयोजित प्रशिक्षण एवं तकनीकी मार्गदर्शन से इन्होने 20 बेड से वर्मीकम्पोस्ट इकाई की स्थापना की, वर्तमान में इनके खेत में 18000 वर्गफीट पर वर्मीकम्पोस्ट इकाई से 300 टन वर्मीकम्पोस्ट उत्पादित कर स्वयं की फर्म रूद्रा एग्रो बायोटेक इण्डस्ट्रीज के नाम से मार्केटिंग कर रहे है जिससे प्रतिवर्ष औसत 36.00 लाख रूपये की सकल आय प्राप्त हो रही हैं।

वर्ष 2023-24 में औसत उत्पादन, आय और लाभ लागत अनुपात (वर्मीकम्पोस्ट इकाई 18000 वर्ग फीट)

कृषि उद्यम	उत्पादन (क्विं.)	सकल आय (₹ लाख में)	सकल लागत (₹ लाख में)	शुद्ध आय (₹ लाख में)	लाभ लागत अनुपात
वर्मीकम्पोस्ट	3000.00	30.00	18.00	12.00	1.66
वर्मीकल्चर	50.00	6.00	1.50	4.50	4.00

अन्य किसानों पर सफलता का असर

केन्द्र से प्रशिक्षण प्राप्त कर एवं श्री उमेश नागर से प्रेरणा लेकर जिले के दर्जनों ग्रामीण युवाओं ने वर्मीकम्पोस्ट को रोजगार के रूप में अपनाकर 2.00–7.00 लाख औसत सकल आय प्रति वर्ष कमा रहे है।

पुरस्कार

श्री नागर को वर्मीकम्पोस्टींग के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु जिला स्तरीय कृषक प्रशस्ति पत्र पुरस्कार, कृषि जागरण नई दिल्ली द्वारा मिलेनियर फार्मर अवार्ड प्राप्त हुआ है।

केन्द्र के तकनीकी मार्गदर्शन में स्थापित वर्मीकम्पोस्ट इकाई

नाम	पता	मोबाईल नं.	वार्षिक सकल आय (₹ लाख में)
श्री विष्णु प्रकाश नागर	जोरावरपुरा, पीपल्दा, कोटा	9772315111	5.00–7.00
श्री हरिप्रकाश शर्मा	सनीजा बावडी, कोटा	9829909391	2.00–3.00

12. Vermicomposting : Waste to Wealth

Name : Mr. Umesh Nagar
Father's Name : Mr. Brijmohan Nagar
Address : Padasliya, Digod, Kota (Raj.)
Mobile No. : 9649700260

Technology

Vermicomposting is a popular solid waste management technique. It is a simplistic microbiological composting method in which certain earthworm species are employed to enhance the waste conversion process and produce a better end product. Vermicompost contains nutrients such as nitrates, soluble phosphorus, exchangeable potassium, calcium, magnesium and other micronutrients such as zinc, copper, iron, manganese etc. in forms that are readily available to plants.

Economics of Vermicompost Unit (3000 Sqf)

Establishment cost	:	₹ 3.50 lakh
Annual vermicompost production	:	500 q
Average sale rate of vermicompost	:	₹ 10/kg
Annual gross income	:	₹ 5.00 lakh
Annual expenditure	:	₹ 3.00 lakh
Annual net income	:	₹ 2.00 lakh
Benefit cost ratio (BCR)	:	1.66

Role of KVK

The center had organized training on vermicompost for youth and farmers in the district. Due to which the youth of the district are adopting vermicompost as a startup.

Core Activity

Mr. Umesh Nagar did engineering and after that thought for starting a startup in agriculture. He has established vermicompost unit with 20 beds with the training and technical guidance of the centre. Presently, he is producing 300 tons of vermicompost from the 18000 sqf vermicompost unit in his farm and marketing it in the name of his own firm Rudra Agro Biotech Industries, earning an average of Rs. 36.00 lakh gross income per year.

Average production, income and cost-benefit ratio of during 2023-24 (Vermicompost unit 18000 sqf)

Agri-enterprise	Production (q)	Gross income (₹ in lakh)	Gross Cost (₹ in lakh)	Net Profit (₹ In lakh)	B:C ratio
Vermicompost	3000.00	30.00	18.00	12.00	1.66
Vermiculture	50.00	6.00	1.50	4.50	4.00

Spread effects on fellow farmers

After receiving training from the center and inspiration from Mr. Nagar, dozens of rural youth of the district have established vermicompost unit and are earning an average of Rs. 2.00-7.00 lakh gross income per annum.

Awards

Mr. Nagar has received district level appreciation award and Millionaire Farmer Award by Krishi Jagran, New Delhi for his excellent work in the field of vermicomposting.

Vermicompost unit established under technical guidance of the center

Name	Address	Mobile No.	Annual Gross Income (₹ in lakh)
Mr. Vishnu Prakash Nagar	Jorawarpura, Pipalda, Kota	9772315111	5.00-7.00
Mr. Haripraksh Nagar	Sanija Bawari, Kota	9829909391	2.00-3.00

13. मशरूम उत्पादन : अतिरिक्त आय का स्त्रोत

नाम : श्री यशराज साहू
पिता का नाम : श्री सत्यनारायण साहू
पता : बोरखेड़ा, कोटा (राज.)
मोबाईल न. : 7413947856

मशरूम उत्पादन तकनीकी

मशरूम की पौष्टिक गुणवत्ता एवं औषधीय महत्व की वजह से मशरूम की खेती में युवाओं व किसानों की रूची दिन प्रतिदिन बढ रही है। मशरूम की खेती करके ग्रामीण युवा कम लागत में अधिक मुनाफा कमा सकते हैं।

बटन मशरूम उत्पादन का फ्लो चार्ट

माध्यम–गेंहू का भूसा
↓
अन्य सामग्री (मुर्गी की खाद, यूरिया, म्यूरेट ऑफ पोटाश, केल्सियम अमोनियम नाईट्रेट की अनुसंशित मात्रा को मिला कर ढेरी तैयार करना)
↓
ढेरी की पलटाई करना
↓
तीसरी पलटाई (13 वें दिन जिप्सम की अनुशंसित मात्रा मिलाना)
↓
8 वीं पलटाई के बाद कम्पोस्ट तैयार (28 वें दिन)
↓
बिजाई करना
बिजाई के 12 से 14 दिन पश्चात केसिंग करना
↓
मशरूम की आरम्भिक अवस्था
↓
मशरूम की पैदावार

ऑएस्टर मशरूम उत्पादन का फ्लो चार्ट

माध्यम–गेंहू का भूसा
↓
ड्रम में 12–15 घण्टे पानी में भिगोना एवं रासायनिक उपचार
↓
गेंहू के भीगे हुए भूसे को 02–03 घण्टे के लिए सुखाना (अतिरिक्त नमी कम करने हेतु)
↓
गेंहू के भूसे में अनुशंसित बीज की मात्रा मिलाना
↓
मशरूम बैग को मशरूम उत्पादन कक्ष में रखना
↓
मशरूम कक्ष में तापमान एवं आर्द्रता का प्रबंधन करना
↓
मशरूम की आरम्भिक अवस्था
↓
मशरूम की पैदावार

बटन मशरूम का आर्थिक विश्लेषण : 2000 बैग

स्थापना खर्च (मशरूम शेड, रैक एवं अन्य मशीनरी, उपकरण)	:	₹20.00 लाख
कुल मशरूम उत्पादन प्रति वर्ष	:	120 क्विं.
मशरूम विक्रय दर	:	₹140 प्रति कि.ग्रा.
वार्षिक मशरूम उत्पादन से आय	:	₹16.80 लाख
कुल वार्षिक लागत	:	₹ 9.00 लाख
कुल वार्षिक शुद्ध आय	:	₹ 7.80 लाख
लाभ लागत अनुपात	:	1.86

कृषि विज्ञान केन्द्र का योगदान

केन्द्र द्वारा ग्रामीण युवाओं एवं किसानों के लिए मशरूम उत्पादन तकनीकी पर प्रशिक्षण आयोजित कर ग्रामीण युवाओं को मशरूम की खेती द्वारा स्वरोजगार से जोड़ा जा रहा है।

मूल गतिविधि

केन्द्र द्वारा वर्ष 2020 में आयोजित मशरूम उत्पादन तकनीकी प्रशिक्षण में श्री यशराज साहू ने प्रशिक्षण प्राप्त किया एवं इसके पश्चात् 500 बैग से ऑयस्टर मशरूम की खेती कर 45–60 दिन में 80,000–85,000 रूपये का मुनाफा कमाया। केन्द्र के तकनीकी मार्गदर्शन उपरान्त निजी मशरूम स्पॉन लैब तैयार कर मशरूम उत्पादको को स्पॉन उपलब्ध करवा रहे हैं। वर्तमान में इनके मार्गदर्शन में अन्य युवा मशरूम उत्पादन कर रहे है जिसको यह स्वयं खरीदकर तथा मशरूम के विभिन्न प्रसंस्कृत उत्पाद, सूखा ऑयस्टर मशरूम, मशरूम पाउडर, मशरूम अचार इत्यादि उत्पाद की मार्केटिंग में सहायता कर रहे हैं।

वर्ष 2023-24 में औसत उत्पादन, आय और लाभ लागत अनुपात

कृषि उद्यम/ गतिविधि	उत्पादन (क्विं.)	सकल आय (₹ लाख में)	सकल लागत (₹ लाख में)	शुद्ध आय (₹ लाख में)	लाभ लागत अनुपात
सूखा ऑयस्टर मशरूम	20.00	16.00	9.60	6.40	1.66
मशरूम स्पॉन	15.00	1.80	0.90	0.90	2.00

अन्य किसानों पर सफलता का असर

केन्द्र से प्रशिक्षण एवं श्री यशराज से प्रेरणा लेकर एक दर्जन युवा खेती के साथ–साथ मशरूम उत्पादन कर 1.00–6.00लाख रूपये सकल आय प्रतिवर्ष कमा रहे है।

70 किसानों ने लिया प्रशिक्षण 15 किसानों ने शुरू किया उत्पादन

किसानों को रास आने लगी मशरूम की खेती

40 से 45 दिन में तैयार हो जाती है फसल

कोविड ने बदला खेती का ट्रेंड

Exclusive

युवाओं का मशरूम उत्पादन पर ज्यादा रूझान

केन्द्र के तकनीकी मार्गदर्शन में स्थापित मशरूम इकाई

नाम	पता	मोबाईल नं.	वार्षिक सकल आय (₹ लाख में)
श्री हेमन्त खींची	मण्डाना, कोटा	9351203230	5.00–6.00
श्री प्रेमशंकर सैनी	नयाबरधा, बून्दी	8104541199	2.00–3.00
श्री विकास नागर	सांगोद, कोटा	8003302585	1.00–1.50
श्री अक्षय प्रजापति	थूनपुर, कोटा	8209105743	1.00–1.20

13. Mushroom Production : Source of Additional Income

Name : Mr. Yashraj Sahu
Father's Name : Mr. Satyanarayan Sahu
Address : Borkhera, Kota (Raj.)
Mobile No. : 7413947856

Mushroom Production Technology

The interest of mushroom cultivation among youth and farmers is progressively increasing due to its nutritional and medicinal properties. Engaging in mushroom cultivation enables rural youth to generate higher profits at low cost.

Button mushroom production technology flow chart

Substrate-wheat straw
↓
Other ingredients (recommend dose of chicken manure, MOP, CAN etc. and pile formation)
↓
Turning of compost pile
↓
3rd turning of pile (13th day -add recommended dose of gypsum)
↓
8th turning of compost pile (28th day)
↓
Spawning
↓
Casing (12-14 days after spawning)
↓
Pin head stage
↓
Mushroom production

Oyster mushroom production technology flow chart

Substrate-wheat straw
↓
Soaking in water for 12-15 hours in drum and chemical treatment
↓
Drying soaked wheat straw for 02-03 hours (to reduce excess moisture)
↓
Spawning
↓
Keeping mushroom bags in growing room
↓
Management of temperature and humidity in mushroom growing room
↓
Bud initiation of mushroom
↓
Mushroom production

Economics of button mushroom unit (2000 bags)

Establishment cost (Mushroom shed, racks, equipments etc.	:	₹ 20.00 lakh
Annual mushroom production	:	120 q
Average sale rate of mushroom	:	₹ 140/kg
Annual gross income from mushroom	:	₹ 16.80 lakh
Annual expenditure	:	₹ 9.00 lakh
Annual net income	:	₹ 7.80 lakh
Benefit cost ratio (BCR)	:	1.86

Role of KVK

KVK organizing training programmes on mushroom production technology for rural youth and farmers for connecting rural youth with self-employment through mushroom cultivation.

Core Activity

Mr. Yashraj Sahu participated in mushroom production technology training conducted by the centre in the year of 2020. After that he started oyster mushroom cultivation with 500 bags and earned profit of Rs. 80,000-85,000 within 45-60 days. After the technical guidance of the centre, he established private mushroom spawn lab and make available spawn to the mushroom growers. Presently, under Sahu's supervision, other youth are involved in mushroom production. He is procuring and assisting in the marketing of various processed mushroom products such as dried oyster mushrooms, mushroom powder, and mushroom pickle etc.

Average production, income and cost-benefit ratio during 2023-24

Agri-enterprise / Activity	Production (q)	Gross income (₹ in lakh)	Gross Cost (₹ in lakh)	Net Profit (₹ In lakh)	B:C ratio
Dry oyster mushroom	20.00	16.00	9.60	6.40	1.66
Mushroom spawn	15.00	1.80	0.90	0.90	2.00

Spread effects on fellow farmers

One dozen youth have adopted mushroom cultivation from training and inspiration of Mr. Yashraj and are earning Rs. 1.00-6.00 lakh gross income per annum.

70 किसानों ने लिया प्रशिक्षण 15 किसानों ने शुरू किया उत्पादन

किसानों को रास आने लगी मशरूम की खेती

40 से 45 दिन में तैयार हो जाती है फसल

कोविड ने बदला खेती का ट्रेंड

युवाओं का मशरूम उत्पादन पर ज्यादा रूझान

Mushroom unit established under technical guidance of the center

Name	Address	Mobile No.	Annual Gross Income (₹ in lakh)
Mr. Hemant Khinchi	Mandana, Kota	9351203230	5.00-6.00
Mr. Premshankar Saini	Nayabardha, Bundi	8104541199	2.00-3.00
Mr. Vikas Nagar	Sangod, Kota	8003302585	1.00-1.50
Mr. Akshay Prajapati	Thunpur, Kota	8209105743	1.00-1.20

कृषि विज्ञान केन्द्र-बोरखेडा,कोटा

प्रशासनिक भवन
कृषि विश्वविद्यालय, कोटा